



भारत का राजपत्र The Gazette of India

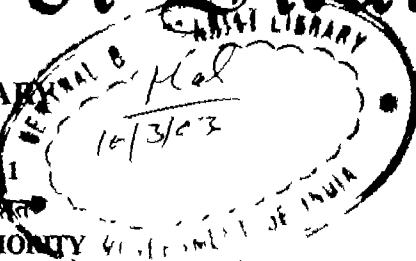
असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 246]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 20, 2002/भाद्र 29, 1924

No. 246]

NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 20, 2002/BHADRA 29, 1924

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 सितम्बर, 2002

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य और सिंगापुर के मूल के अथवा वहां से निर्यातित डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसिन बेस (पीएचपीजी-बेस) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम।

सं. 51/1/2001-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. प्रक्रिया

1. नीचे वर्णित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) ने दिनांक 1 अक्टूबर, 2001 की अधिसूचना सं० 51/1/2001-डीजीएडी द्वारा चीन जनवादी गणराज्य और सिंगापुर के अथवा वहां से निर्यातित डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसिन बेस के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच के बारे में प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित किया था तथा हितबद्ध पक्षकारों से इसके प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था ;
- (ii) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति भेजी थी जिनसे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था;

- (iii) प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति संबंधित देशों के नई दिल्ली स्थित दूतावासों/उच्चायोगों को भी इस अनुरोध के साथ भेजी थी कि वे प्रारंभिक निष्कर्षों पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत करें।
- (iv) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए 10 अप्रैल, 2002 को सार्वजनिक सुनवाई का अवसर प्रदान किया जिसमें घरेलू उद्योग, आयातकों और निर्यातकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों को मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से इस प्रकार प्राप्त लिखित निवेदनों पर नामित प्राधिकारी द्वारा इन निष्कर्षों पर विचार किया गया है।
- (v) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल उनके अनुरोध पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई।
- (vi) प्रारंभिक निष्कर्षों की घोषणा से पहले हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्क, जिन्हें अधिसूचित किए गए प्रारंभिक निष्कर्षों में प्रकाशित किया गया है, को संक्षिप्तता के कारण इसमें शामिल नहीं किया गया है। परन्तु हितबद्ध पक्षकारों द्वारा बाद में दिए गए तर्कों पर प्रारंभिक निष्कर्षों आर/या इन निष्कर्षों में उचित ढंग से विचार किया गया है।
- (vii) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए सुविचारित अनिवार्य तथ्यों/आधार का ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के लिए खुलासा किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी इन निष्कर्षों में विधिवत् विचार किया गया है।
- (viii) यह जांच 1 अप्रैल, 2001 से 30 सितंबर, 2001 तक की अवधि में की गई थी।
- (ix) अधिसूचना में ***** उस सूचना को दर्शाता है जो हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के आधार पर दी गयी थी और प्राधिकारी द्वारा उस पर नियमानुसार विचार किया गया था।

ख. याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच

2. निर्यातकों के विचार:

मै0 कनेका सिंगापुर कं0 (प्रा0) लि0

- (क) जब चीन से पाटन आरंभ हुआ जिसे फरवरी, 2001 में हुआ बताया गया है, डीओएल ने

उत्पादन अभी आरंभ नहीं किया था। डी ओ एल कहता है कि उन्होंने उत्पादन अप्रैल, 2001 में शुरू किया।

- (ख) डी ओ एल केवल 20 एम टी प्रतिमाह से भी कम उत्पादन करता है। यह कहा जा सकता है कि आयातों की तुलना में डी ओ एल की मात्रा नगण्य है और ताकि यह बात कि कारणात्मक संबंध का तथाकथित 'मात्रा संबंधी प्रभाव' जो क्षति तथा पाटन तय करने का एक अपेक्षित मानदण्ड है, सन्देह दूर नहीं करता है।
- (ग) निर्यात का दावा है कि वह इस उत्पाद से भारतीय स्वास्थ्य उद्योग की कई दशकों से आवश्यकता पूरी करता रहा है। पी एच पी जी बेस ऐमोक्सिसिलीन नामक एक महत्वपूर्ण एंटीबायोटिक के उत्पाद में एक अनिवार्य अंश होता है। ऐमोक्सिसिलीन में पी एच पी जी बेस का प्रमुख भाग होता है और एमोक्सिसिलीन को विश्व स्वास्थ्य संगठन अथवा डब्ल्यू एच ओ ने तथाकथित एक अनिवार्य दवा माना है और इसे अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित, असरदार तथा सस्ती प्राणरक्षक दवा के रूप में जाना जाता है। तथापि, पाटनरोधी शुल्क की वजह से लागत वृद्धि ऐमोक्सिसिलीन की बिक्री-कीमत में परिलक्षित की जाएगी और तब रोगी ही इस लागत-वृद्धि को वहन करता है।
- (घ) घरेलू खपत हेतु ऐमोक्सिसिलीन का अनुमानित उत्पादन लगभग 1200-1300 एम टी प्रतिवर्ष आंका गया है और यह पी एच पी जी बेस के लगभग 600 एम टी प्रतिवर्ष अथवा इससे भी अधिक के बराबर है और इसमें अब भी वृद्धि हो रही है। यह माना जाहिर है, डी ओ एल की क्षमता से अपेक्षतया अधिक है क्योंकि उन्होंने इसका 500 एम टी होने का दावा किया है।
- (ङ) निर्यातक का दावा है कि उनकी तकनालॉजी अत्यधिक उन्नत, कार्यकुशल, अत्याधुनिक, गतिहीन एंजाइन विधि जिसमें जीन तकनालॉजी (डी एन ए की पुनर्संश्लेषण) वाली तकनालॉजी है, जबकि उनकी तकनालॉजी परंपरागत रसायन वियोजन विधि वाली है और इसलिए लागत ढांचा पूर्णतया भिन्न है।
- (च) इसके अतिरिक्त, निर्यातक ने निवेदन किया है कि वे विश्व में पीएचपीजी बेस तथा पीएचपीजी डेन साल्ट के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक हैं और इस उत्पाद का मात्रा एवं गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से एक सर्वाधिक प्रतिष्ठित तथा विश्वसनीय सप्लायर माना जाता है ताकि विश्व-स्तर पर ग्राहक अवबोधन एक समान नहीं हो। मैसर्स टैरेन्ट गुजरात बायोटेक लि0 ने भी इस प्रकार निवेदन किया है कि :-
- (i) मैसर्स दौराला आर्गेनिक लि0 (डीओएल) की पीएचपीजी बेस की क्वालिटी सुसंगत नहीं है और इस उत्पाद की क्वालिटी अभी स्थिर होनी रहती है।

- (ii) मैसर्स डीओएल के मामले में इस उत्पाद की क्वालिटी बाजार में उत्पादन, अन्तिम उत्पाद, आदि की दृष्टि से अभी तक सिद्ध नहीं हो पाई है।
- (छ) डी ओ एल का नाम भारत के अलावा किसी अन्य बाजार में नहीं सुना गया है। दूसरी ओर, हम पी एच पी जी बेस का उत्पादन 20 वर्षों से भी अधिक समय से करते रहे हैं। इसकी वर्तमान क्षमता लगभग 3000 एमटी प्रतिवर्ष है और हम पी एच पी जी बेस तथा पी एच पी जी डेन साल्ट की सप्लाई पूरे विश्व के ग्राहकों को करते रहे हैं।
- (ज) जैसाकि सरकार द्वारा मौखिक सुनवाई के दौरान कहा गया है कि आयातों को जहाज से उतरते समय का मूल्य जिसे सरकार ने 24.83 अमरीकी डालर पर तय किया था, और जो डी ओ एल की उत्पादन पर आधारित है, का अर्थ यह होगा कि या तो उनकी उत्पादन लागत में हमारी उत्पादन लागत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि होगी या उन्हें बहुत बड़ा लाभ हुआ होगा। यदि मामला उत्पादन लागत में वृद्धि का हो तो हमें आश्चर्य है कि डी ओ एल अपना व्यापार कैसे चला सका होगा जबकि चीन से कीमत कटौती नहीं रही जो कि ऊंची लागत के महज कारण से फरवरी, 2001 में (डी ओ एल की याचिका के अनुसार) आरंभ हुई थी।
- (झ) जब डी ओ एल ने याचिका दायर की थी तब भारत में आयातित पी एच पी जी बेस पर लागू कुल कर तथा प्रशुल्क लगभग 41% थी। इस प्रकार 24.83 अमरीकी डालर का हिसाब 17.60 अमरीकी डालर प्रति किग्रा (सी आई एफ) बैठता है। यह कीमत करीब 1995-1996 अर्धवर्ष की विश्वव्यापी कीमत के बराबर है। यह उत्पाद बाजार में लगभग 1970 से है और इसका विश्व स्तर पर चालू बाजार लगभग 8000 एम टी प्रति वर्ष का है। इस उत्पाद की निम्न बाजार द्वारा पूर्ति-मांग सन्तुलन आधार पर निर्धारित की गई है। भारत के लिए बाजार की कीमत बाजार की ऐसी ही कीमत प्रणाली द्वारा निर्धारित की जाती है और यह बिल्कुल गैर भेदकारी नहीं है। हालांकि तब से विश्व स्तर पर बाजार कीमत में गिरावट का रुख रहा है, यदि डी ओ एल समझता है कि उनका व्यापार 17.60 अमरीकी डालर प्रति किग्रा से कम कीमत पर अर्थक्षम नहीं रह सकता है, बेशक चीन ने कीमत फरवरी, 2001 से गिराना शुरू भी कर दिया अथवा नहीं, लेकिन डी ओ एल का व्यापार 1995-96 से अर्थक्षम नहीं रहा है और पाटनरोधी का कोई मुद्दा नहीं बनता है। ऐसी स्थिति को मानते हुए, यदि पाटन रोधी शुल्क लगाया जाएगा तो इसका अर्थ यह है कि भारतीय ऐमोक्सिसिलीन उत्पादक पी एच पी जी बेस को विश्वस्तरीय बाजार कीमत से कहीं अधिक कीमत पर खरीदे और इसलिए भारतीय सामाजिक कल्याण पर अधिक लागत देनी होगी।
- (ट) रसायन वियोजन विधि का प्रयोग करने वाले बहुत से पी एच पी जी बेस उत्पादकों जैसे डी एस एम - एण्डेनो, हालैण्ड, निप्पन कायाकू, जापान, वार्ड ब्लैकिनसोप, यू.के. प्लाटफार्मोको, इटली, ब्रैको, इटली आदि विगत में इसकी अधिक उत्पादन लागत के कारण मन्द पड़े हैं।

- (ठ) निर्यातक ने इच्छा व्यक्त की है कि उन्हें पी एच पी जी बेस जोकि लोगों के लिए एक आवश्यक तथा प्राण-रक्षायी दवा एमौक्सिसिलीन का अनिवार्य मध्यवर्ती सामान है की सप्लाई करके भारतीय स्वास्थ्य उद्योग की आवश्यकता पूर्ति जारी रखने का अवसर दिया जाए । इसके लिए वे हमारी विशात क्षमता पर आधारित उत्तम तथा स्थिर क्वालिटी और स्थिर सप्लाई बनाए रखेंगे ।

2. घरेलू उद्योग के विचार

- (i) केवल दो ही निर्यातकों ने प्राधिकारी को उत्तर भेजे हैं । इन निर्यातकों द्वारा दायर उत्तर कुल मिलाकर अपर्याप्त थे जैसाकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों में भी पाया है । सार्वजनिक फाइल में इस बात का संकेत नहीं है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक निष्कर्षों में उल्लिखित कमियों को इन निर्यातकों ने पूरा नहीं किया है । इसलिए, इन निर्यातकों के उत्तरों को अन्तिम निर्णय के लिए भी रद्द कर दिया जाए और प्राधिकारी निर्धारित रूप और तरीके में पूरी जानकारी के अभाव में नियमावली के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर कार्यवाही से सन्तुष्ट होगा । मैसर्स डी ओ एल ने निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह इस संबंध में प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करें ।
- (ii) सिंगापुर के संबंध में याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है कि निर्यातक ने सम्पूर्ण प्रश्नावली उत्तर को दर्ज नहीं किया है । इसके अतिरिक्त, उत्तर का अगोपनीय रूपान्तर सकल रूप में अपूर्ण है । निर्यातक द्वारा कोई उचित अगोपनीय सारांश नहीं दिया गया है, उन्होंने निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह निर्यातक को जानकारी उचित रूप में बताने के लिए निर्देश दें। निर्यातक द्वारा सार्थक अगोपनीय निवेदन के अभाव में घरेलू उद्योग इस स्थिति में नहीं होगा कि वह निर्यातक के निवेदन का उचित प्रत्युत्तर प्रस्तुत कर सके । यदि निर्यातक उचित एवं पर्याप्त अगोपनीय सारांश प्रदान नहीं कर सकता है तो ऐसी स्थिति में उत्तर रद्द किया जा सकता है ।
- (iii) घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि उन्होंने निर्दिष्ट प्राधिकारी को स्पष्ट रूप से यह सिद्ध करते हुए विस्तृत जानकारी प्रदान कर दी है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है और पाटित आयातों से इस उद्योग की स्थापना में वस्तुपरक बाधा पहुंच रही है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इसे नोट कर लिया है और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए प्रारंभिक निष्कर्ष पर्याप्त प्रतिपादन करते हैं ।
- (iv) निर्दिष्ट प्राधिकारी क्षति-विश्लेषण का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करें:-
- (क) घरेलू उद्योग को क्षति का मूल्यांकन संचित रूप में करना अपेक्षित है ।

- (ख) संबंधित देशों से हुए आयातों में इस तथ्य के बावजूद स्थिर रूप में वृद्धि हुई है कि घरेलू उद्योग का वाणिज्यिक उत्पादन पहले ही आरंभ हो गया था ।
- (ग) संबंधित देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपना उचित बाजार हिस्सा प्राप्त करने से वंचित रहा जिसे घरेलू उद्योग अन्यथा प्राप्त कर लेता यदि घरेलू उद्योग ने वाणिज्यिक उत्पादन तब आरंभ कर दिया होता ।
- (घ) घरेलू उद्योग अपना उत्पादन-स्तर का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका जिसे वह अन्यथा पाटन नहीं होने पर प्राप्त कर लेता ।
- (ङ.) घरेलू उद्योग की बिक्री में अनुमानों के अनुसार वृद्धि नहीं हुई, हालांकि इस उत्पाद की मांग में वृद्धि तो हुई है किन्तु घरेलू उद्योग इसकी बिक्री में वृद्धि नहीं कर सका है ।
- (च) यद्यपि घरेलू उद्योग ने बाजार में हाल ही में प्रवेश तो किया है किन्तु पाटित आयातों के कारण उसे अपनी कीमतें कम करके अपनी बिक्री कीमतें कम करने पर बाध्य होना पड़ा ।
- (छ) संबंधित देशों से होने वाले आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट आ रही थी ।
- (ज) घरेलू उद्योग ने वाणिज्यिक उत्पादन हाल ही में शुरू किया है । यदि इसके उत्पादन, बिक्री तथा बाजार हिस्से में वृद्धि हुई होती तो इस उद्योग को इस उत्पाद में रोजगार बढ़ाने की उम्मीद हो जाती । तथापि, घरेलू उद्योग रोजगार-वृद्धि कारगर रूप से नहीं कर सका ।
- (झ) इन आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को कम कीमतों पर बिक्री करनी पड़ रही थी । परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा उठाने पर बाध्य होना पड़ा था ।

घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि ये सभी कारण चाहे वे सामूहिक रूप में हो या संचित रूप में, यह सिद्ध करते हैं कि घरेलू उद्योग को वस्तुपरक क्षति हुई है और आगे हो रहे आयातों के कारण इसकी स्थापना में वस्तुपरक बाधा आ रही है । इस प्रकार घरेलू उद्योग को इन आयातों से क्षति हुई ।

- (v) घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि अन्तिम शुल्क केवल अमरीकी डालरों में लगाने की सिफारिश की जाए ताकि विनिमय दर में परिवर्तनों के कारण संरक्षण कम न हो। इसके अतिरिक्त, शुल्क बेंचमार्क कीमतों के अनुसार लगाने की सिफारिश करें जैसाकि प्रारंभिक निष्कर्षों में उल्लेख किया गया था ।
- (vi) निर्यातकों द्वारा यह तर्क उठाने के प्रत्युत्तर में कि डीओएल ने वाणिज्यिक उत्पादन अप्रैल, 2001 से आरंभ किया जबकि पाटन फरवरी, 2001 में शुरू हो गया था, मैसर्स डी ओ एल ने निवेदन किया है कि वर्तमान याचिका चीन तथा सिंगापुर से पाटित आयातों के विरुद्ध है जिनकी वजह से उद्योग की स्थापना में वस्तुपरक बाधा आ रही है । इस प्रकार, फरवरी, 2001 में आरंभ निर्यातों से कम्पनी की स्थापना में वस्तुपरक बाधा आई ।

- (vii) इस तर्क के प्रत्युत्तर में कि घरेलू उद्योग मांग को पूरा नहीं कर सकेगा, घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि माननीय सीईजीएटी ने ई पी डी एम खंड के मामले में निर्णय दिया था कि पाटनरोधी कानूनों के तहत राहत पाने हेतु घरेलू उद्योग के लिए मांग को पूरा नहीं कर सकना एक पूर्व-शर्त नहीं है।
- (viii) प्रस्तुत मामले में घरेलू उद्योग अभी शिशु अवस्था में है जिसने वाणिज्यिक उत्पादन हाल में शुरू किया। जबकि उद्योग सृजित क्षमता तक उत्पादन नहीं कर सकता है, किन्तु उद्योग क्षमता में और अधिक वृद्धि करने की नहीं सोच सकता है।
- (ix) जैसाकि उन्होंने स्वयं माना है, हम 600 एम टी की मांग की तुलना में 500 एमटी तक का उत्पादन कर सकते हैं।
- (x) हमारी ऐसी समझ है कि इस उत्पाद के निर्यात पर कुछ आयात भी होता है। चूंकि ये आयातों (उन्हें दिए गए शुल्क के लाभ के कारण)की वजह से जरी रहेंगे इसलिए घरेलू उद्योग को इतनी मांग कारगर ढंग से उपलब्ध नहीं हो सकेगी।
- (xi) उपर्युक्त के नहीं होते हुए भी निवेदन है कि हम ग्राहक की जरूरतें पूरी करने के लिए वचनबद्ध हैं और सभी आवश्यक उपाय करेंगे, बशर्ते कि बाजार प्रतियोगी बना रहे और हमें अपने उत्पाद के लिए उचित कीमत मिलती रहे।
- (xii) निर्यातकों के इस तर्क के प्रत्युत्तर में कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा आयातों की तुलना काफी कम हैं हम कनेका से इस बात पर सहमत हैं कि हमारी सारी शिकायत यही है कि हम बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण विशाल बाजार के बावजूद नव आरंभ उत्पाद की बिक्री नहीं कर सके हैं। वास्तव में, कनेका के वक्तव्य से यह सिद्ध हो जाता है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति होती है।
- (xiii) कनेका ने यह बात मान ली है कि उसके उत्पाद की कीमत बाजार द्वारा तय होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत के लिए उनकी निर्यात कीमत भारत में चल रही कीमत पर निर्भर थी। जब चीन के उत्पादकों ने अपनी कीमतें कम कर दी थीं तब इससे कनेका को अपनी सप्लाई की पुनरीक्षा हेतु बाध्य होना पड़ा।

कनेका ने तर्क दिया है कि कीमतें विश्व-व्यापी रूप में एक जैसी रहती हैं। यह बात कल्पनातीत है। इस प्रकार से कनेका ने तर्क दिया है कि इस उत्पाद की कीमतें पूरे विश्व एक समान रहती हैं।

4. आयातकों के विचार:

मैसर्स टीरेन्ट गुजरात बायोटेक लि०

मैसर्स टीरेन्ट गुजरात बायोटेक लि० जोकि सन्दर्भाधीन माल के आयातकों में से एक है, ने निवेदन किया है कि :-

- (क) डी (-) पारा हाईड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस (पी एच पी जी बेस) ऐमोक्सिसिलीन ट्राइहाइड्रेट के विनिर्माण हेतु एक महत्वपूर्ण संघटक होता है। देश में पी एच पी जी बेस की कुल खपत 2200/2500 एमटी प्रतिवर्ष से भी अधिक है।
- (ख) पेनिसिलीन आधारित एन्टीबायोटिक दवा, विशेषरूप से ऐमोक्सिसिलीन ट्राइहाइड्रेट ही सबसे कम कीमत की दवा है जिसका प्रयोग अधिकांश विकासशील/विकसित देशों में व्यापक रूप से किया जाता है।
- (ग) डी ओ एल ने पी एच पी जी बेस का उत्पादन हाल में शुरू किया है और जहां तक इसके उत्पादन, अन्तिम उत्पाद की स्थिरता, आदि का संबंध है, इसके उत्पाद की क्वालिटी बाजार में अभी तक सिद्ध नहीं हो पाई है।
- (घ) भारत में इस उत्पाद का एकमात्र उत्पादक डी ओ एल ही है और सन्दर्भाधीन उत्पादन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के परिणामस्वरूप घरेलू बाजार में एकाधिकारवादी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी और ऐमोक्सिसिलीन ट्राइहाइड्रेट के भारतीय विनिर्माताओं को इस बात के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि या तो वे पाटनरोधी शुल्क के साथ माल का आयात करें या स्थानीय उपलब्ध माल का प्रयोग करें जिसके क्वालिटी नियंत्रण मानदण्ड अर्थात् अपेक्षित न्यूनतम उत्पादन, उत्पाद की अशुद्धता तथा स्थिरता अभी तक सिद्ध नहीं हुई है।
- (ङ) तदनुसार, आयातक ने निवेदन किया है कि :
- (1) पाटनरोधी शुल्क तय करने का कोई औचित्य नहीं बनता है।
 - (2) यह निष्कर्ष देना सही नहीं होगा कि चीन जनवादी गणराज्य तथा सिंगापुर से भारत को पी एच पी जी का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया जैसाकि इसकी यूरोपीय सप्लायरों द्वारा भी लगभग उसी कीमत पर आफर की जाती है।
 - (3) यह निष्कर्ष कर देना सही नहीं है कि चीन जनवादी गणराज्य और सिंगापुर से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योगों को वस्तुपरक क्षति हुई है।
 - (4) आयातक ने और आगे यह अनुरोध किया है कि ऐमोक्सिसिलीन विनिर्माताओं के हित में राष्ट्रहित में चीन जनवादी गणराज्य तथा सिंगापुर से आयातित पीएचपीजी बेस पर पाटनरोधी शुल्क लगाने संबंधी प्रस्ताव को समाप्त कर दिया जाए।

5. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी उजागर करने संबंधी वक्तव्य पर हितबद्ध पार्टियों के विचार:

(i) घरेलू उद्योग के विचार:

मैसर्स कनेका, सिंगापुर द्वारा किए गए निवेदन अपर्याप्त हैं और उन्होंने हमें निर्दिष्ट

प्राधिकारी के समक्ष अपने हितों की रक्षा कर सकने हेतु कोई सार्थक अगोपनीय निवेदन नहीं किए हैं। प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा दिए गए ऐसे अनेक विसंगतियों/विरोधाभास वक्तव्यों का उल्लेख कर दिया है। प्राधिकारी ने एक बार उन मुद्दों को अभिज्ञात कर दिया जो सन्दर्भाधीन माल की उत्पादन-लागत के निर्धारण के लिए संकटपूर्ण हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी को चाहिए था कि वह निर्यातक के लागत-निर्धारण संबंधी सम्पूर्ण निवेदन को रद्द कर देते और नियम 6(8) अर्थात् सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के तहत सामान्य मूल्य का निर्धारण कर देते।

(ii) आयातकों के विचार

मैसर्स टोरेन्ट गुजरात बॉयोटेक लि०

- (क) बल्क दवा - एमौक्सिसिलीन जिसका वे विनिर्माण कर रहे हैं एक जीवन रक्षक दवा है जिसका प्रयोग मानव खपत के लिए एंटीबॉयोटिक के रूप में बहुत से नुस्खों में होता है। इस बल्क दवा के विनिर्माण में शामिल डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस एक महत्वपूर्ण संघटक है और इस उत्पाद में क्वालिटी परिवर्तन होने से अन्तिम-उत्पाद पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- (ख) औषधि उद्योग के लिए कच्चे माल के प्रयोग हेतु ऐसे सख्त क्वालिटी नियंत्रण रखे गए हैं जिन्हें अन्तिम उत्पाद की क्वालिटी से गुजरना पड़ता है। घरेलू उद्योग के 'कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं' के विचार को इसलिए स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि कच्चे माल की क्वालिटी में मामूली अन्तर आ जाने से अन्तिम उत्पाद की क्वालिटी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जिसे अन्तिम प्रयोक्ता द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
- (ग) याचिकाकर्ता का यह विचार कि अयोग्य क्वालिटी अन्तर होने से उत्पाद भिन्न नहीं बन जाता है, सही नहीं है। इस कच्चे माल का प्रयोग मूल रूप से जीवन रक्षक दवा के लिए होता है और क्वालिटी के संबंध में कोई समझौता करना किसी भी हाल में स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
- (घ) याचिकाकर्ता के इस विचार को कि उन्हें बार-बार आर्डर मिले हैं, इस उत्पाद की क्वालिटी संबंधी आवश्यक अनुमोदन तथा ग्राह्यता नहीं समझी जाती है।

(iii) निर्यातकों के विचार:

मैसर्स कनेका, सिंगापुर जो इस माल का एक निर्यातक है, ने उजागर वक्तव्य के प्रत्युत्तर में अपने दिनांक 30 अगस्त, 2002 के पत्र द्वारा यह स्पष्टीकरण मांगे है कि वे उजागर वक्तव्य

पर अपने विचार प्रस्तुत करने से पहले सामान्य मूल्य तथा निर्जित कीमत की गणना में अपनाई जाने वाली विधि के बारे में जानना चाहते हैं। मैसर्स कनेका को इसका उत्तर भेजा गया और उन्हें सलाह दी गई थी कि वे उजागर वस्तु पर बढ़ाई गई समयावधि के भीतर अपनी टिप्पणी भेज दें। तथापि, इस संबंध में मैसर्स कनेका से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

प्राधिकारी द्वारा जांच:

प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए सभी निवेदनों पर गुणावगुण आधार पर तथा नियमावली के अनुसार विचार किया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद:

6. डी - पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस को निम्नलिखित नाम से भी जाना जाता है:-
 - (क) डी (-) अल्फा पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन, डी (-) अल्फा पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस, डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन, पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस, पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन, डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस, डी (-) पी हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन।
 - (ख) याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि सर्वाधिक डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस (जिसे उपर्युक्त लक्षणों के अनुसार भी पढ़ा जाएगा) अर्थात् सन्दर्भधीन माल (जिसका इसके बाद 'पीएचपीजी' के नाम से भी उल्लेख है) का भारत में आयात होता है जिसे विभिन्न आयातकों/विनिर्माताओं द्वारा 'डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन मीथी/पेटेन्शियम डेन साल्ट (जिसका इसके बाद पीएचपीजीडीसी के रूप में उल्लेख है) के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है और जिसका प्रयोग एमोक्सिसिलीन तथा सीफेड्रॉक्सि (अर्थात् बल्क दवा) के उत्पादन के लिए किया जाता है।
 - (ग) सभी प्रकार के पीएचपीजी को सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची - 1 के शीर्षक 29.42 अध्याय में वर्गीकृत किया गया है। आईटीसी आठ-अंकीय वर्गीकरण के अनुसार पीएचपीजी बेस को अन्य श्रेणी अर्थात् 2942.0029 में वर्गीकृत किया गया है। की गई जांच विचाराधीन उत्पाद के विरुद्ध है चाहे वह वर्गीकरण के संबंध में हो जिसके तहत इसका आयात किया जाता है। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल इंगित भाग करता है और मौजूदा जांच के दायरे में यह बाध्यकारी नहीं है। प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद संबंधी प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं।

7. समान वस्तुएं:

पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में उल्लेख है कि 'समान वस्तुओं' का तात्पर्य एक

ऐसी वस्तु से है जो जांच के अधीन उत्पाद के हर तरह से समरूप अथवा समान हो अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर वह दूसरी वस्तु जो जांच के अधीन वस्तुओं के निकट समरूप विशेषता वाली हो।

(क) निर्यातक के विचार:

मैसर्स कनेका जो संबंधित देशों से संबंधित माल के निर्यातकों में से एक है, ने कहा है कि पी एच पी जी बेस का उत्पादन उनकी अद्वितीय निश्चल एंजीमैटिक विधि द्वारा किया जाता है जोकि याचिका में उल्लिखित भारतीय तथा चीन की उत्पादन विधि अधिकांशतः परम्परागत रसायन विधि होती है और उनकी निश्चल एंजीमैटिक विधि द्वारा उत्पादन लागत इस रसायन विधि के कहीं कम आती है।

(ख) आयातक के विचार:

मैसर्स गुजरात बायोटेक लि० जोकि सन्दर्भाधीन माल के आयातकों में से एक हैं ने निवेदन किया है कि मैसर्स दौराला आर्गेनिक्स लि० (डीओएल) के पी एच पी जी बेस की क्वालिटी समनुरूप नहीं है और इस उत्पाद को इसकी क्वालिटी के लिए अभी निर्यात नहीं करता है। एमोक्सिसिलीन ट्राइहाइड्रेट की क्वालिटी का सीधा संबंध पी एच पी जी बेस की क्वालिटी से होता है।

अब तक पीएचपीजी बेस का आयात यूरोप, सिंगापुर तथा चीन जनवादी गणराज्य से होता आया है क्योंकि इस माल के लिए कोई ऐसा घरेलू स्रोत नहीं है जो समनुरूप क्वालिटी तथा मात्रा आपूर्ति सुनिश्चित कर सके।

(ग) घरेलू उद्योग के विचार:

(i) याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि संबंधित देशों से आयातित पीएचपीजी बेस और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित पीएचपीजी बेस में तकनालाजी, कार्य तथा प्रयोग, विपणन, कीमत-निर्धारण तथा ग्राहक अवबोधन की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीएचपीजी बेस और संबंधित देशों से निर्यातित पीएचपीजी बेस तकनीकी तथा वाणिज्यिक दृष्टि से दोनों ही एक दूसरे के स्थानापन्न योग्य हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीएचपीजी बेस और संबद्ध देशों से आयातित पीएचपीजी बेस पाटन-रोधी नियमावली के तात्पर्य के भातर तदृश वस्तु नहीं है।

(ii) सिंगापुर के निर्यातक के इस निवेदन के प्रत्युत्तर में कि उद्योग द्वारा प्रयुक्त तकनालाजी भारत तथा चीन के उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त तकनालाजी से भिन्न है,

मैसर्स डीओएल ने निवेदन किया है कि उत्पादन तकनालॉजी कोई भी हो किन्तु संबद्ध माल सदृश्य वस्तु है। निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि तकनालॉजी अथवा उत्पादन प्रक्रिया में अन्तर का तात्पर्य है कि दोनों वस्तुएं सदृश्य वस्तुएं नहीं हैं। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित पीएचपीजी बेस और संबद्ध देशों द्वारा निर्यातित पीएचपीजी बेस एक दूसरे के स्थानापन्न योग्य हैं। पाटन के संबंध में पाटन का मुद्दा क्वालिटी संबंधी तर्क से संबंधित उत्पादन तकनालॉजी में अन्तर के बारे में नहीं है। मैसर्स डीओएल ने निवेदन किया है कि:

- (क) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने कई मामलों में यह निर्णय दिया कि अनर्ह क्वालिटी अन्तर की वजह से वस्तु भिन्न नहीं हो जाती है। ज्यादा से ज्यादा क्वालिटी में मात्रा अन्तर के लिए ही कहा जा सकता है।
- (ख) सीईजीएटी ने ईपीडीएम रबड़ पर पाटनरोधी शुल्क के संबंध में निर्णय दिया था कि पाटनरोधी जांच के लिए क्वालिटी एक संगत तत्व नहीं हो सकता है। हितबद्ध पार्टियों का यह भी दावा नहीं है कि हमने जिस वस्तु का उत्पादन किया है वह विचाराधीन उत्पाद की तरह सदृश्य वस्तु नहीं है (जो कि एकमात्र संगत विचार तत्व है)।
- (ग) निर्यातकों तथा आयातकों का दावा यह है कि आयातित उत्पाद क्वालिटी में बेहतर हैं। तथापि उम्मास दावा यह है कि उसकी बिक्री न केवल उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर बल्कि हमारी बिक्री कीमत से भी कम कीमत पर हो रहा है।
- (घ) उन्हें भारत में सन्दर्भाधीन माल के कुछ बड़े उपभोक्ताओं से बार-बार आर्डर प्राप्त हुए हैं और उन्हें हमारे उत्पाद की क्वालिटी न केवल स्वीकार्य बल्कि सन्तोषजनक लगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच:

प्राधिकारी ने अपने प्रारंभिक निष्कर्षों में यह तय किया था कि उनके द्वारा उत्पादित तथा बेचे गए डी (-) पैरा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लिसीन बेस (पी एच पी जी बेस) और जिसका संबंधित देशों से आयात किया गया, का प्रयोग भारत के उपभोक्ताओं द्वारा परस्पर अदला-बदली करके किया जा रहा है। प्राधिकारी इस संबंध में अपने प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करता है और निर्णय देता है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित तथा संबंधित देशों द्वारा निर्यातित पीएचपीजी बेस दोनों ही उपर्युक्त नियम-2 के तहत समान वस्तुएं हैं।

8. घरेलू उद्योग:

- (i) पाटनरोधी नियमावली के नियम-2 (ख) के अनुसार, 'घरेलू उद्योग का तात्पर्य ऐसे घरेलू

उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण में और उससे जुड़े कार्यकलापों में पूर्ण रूप से कार्यरत हैं या जिनका उक्त वस्तु का संचयी उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख भाग है बशर्ते कि ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित न हों या वे स्वयं उसका आयात न कर रहे हों, ऐसे मामले में इस प्रकार के उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाएगा।"

- (ii) घरेलू उद्योग की परिभाषा को नियमावली के नियम 5 द्वारा और स्पष्ट किया गया है जिसे निम्नानुसार पढ़ा जाएगा :-

.....के आवेदन को घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से प्रस्तुत किया गया जाना जाएगा अगर इसका समर्थन वे घरेलू उत्पादक करते हैं जिनका संचयी उत्पादन याचिका का समर्थन अथवा विरोध, जैसा भी मामला हो, करने वाले घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन के पचास प्रतिशत से अधिक है।"

- (iii) यह याचिका मैसर्स दौराला आर्गेनिक्स लि०, दौराला, मेरठ, उत्तर प्रदेश द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक है। याचिकाकर्ता उपरोक्त नियमावली के नियम 5(3) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने के आधार के मापदण्ड को पूरा करता है।

घ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन :

9. धारा 9(1) (ग) के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :-

- (i) व्यापार के सामान्य रूप में मिलती-जुलती वस्तुओं का तुलनात्मक मूल्य जबकि यह निर्यातक देश या क्षेत्र के उपभोग के लिए हो, जिसका निर्धारण उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाए: या
- (ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार के सामान्य रूप में मिलती-जुलती वस्तुओं की कोई बिक्री न हो या निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थिति के कारण कम बिक्री की गई हो, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा :-
- (क) निर्यातक देश या क्षेत्र या किसी उपयुक्त तीसरे देश से निर्यात किए जाने पर मिलती-जुलती वस्तुओं का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य, जिसका निर्धारण उप-धारा (6) के अन्तर्गत बनाए गए नियमों अनुसार किया जाएगा : या

- (ख) प्रशासनिक लागतों, बिक्री-लागतों और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित राशि जोड़ते हुए उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत, जिसका निर्धारण उप-धारा (6) के अन्तर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाएगा ।

बशर्ते कि ऐसे मामले में, जहां वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी अन्य देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु को निर्यात वाले देश से केवल वाहनान्तरित किया गया है, या निर्यात वाले देश में ऐसी वस्तु का उत्पादन नहीं किया गया हो या निर्यात वाले देश में कोई तुलनात्मक कीमत नहीं हो तब सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा ।

प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निर्यातकों को इस बात का अवसर दिया कि वे इस जांच के संगत जानकारी प्रस्तुत करें और उपर्युक्त खण्ड के अनुसार टिप्पणी यदि कोई हो, आफर की । प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के भारत स्थित दूतावासों/उच्चायोगों को भी लिखा ।

ड. सामान्य मूल्य

10. सिंगापुर

मैसर्स कनेका सिंगापुर कं० (प्रा०) लि० :

- (i) कम्पनी का विचाराधीन उत्पाद की कोई बिक्री नहीं होती है और प्रतिनिधि तृतीय देश को भी पीएचपीजी बेस थी कोई पर्याप्त/प्रतिनिधि बिक्री नहीं है । कम्पनी ने पीएमपीजी बेस की उत्पादन-लागत का ब्यौरा प्रस्तुत किया है । उसका सामान्य मूल्य उत्पादन-लागत पर आधारित होता है जिसमें परिवर्तनशील तथा नियम लागत जमा बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय और यथोचित आय शामिल होती है ।
- (ii) प्रारंभ में कम्पनी ने पीएचपीजी बेस की पीओआई तथा पिछले 2 वर्षों के लिए उत्पादन-लागत बताई थी । प्रारंभिक निष्कर्षों में उल्लिखित कतिपय कमियों के आधार पर प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ उस समय कम्पनी के निवेदन को स्वीकार नहीं किया और निर्मित सामान्य मूल्य को 'सामान्य मूल्य' का आधार अंगीकार कर दिया । मैसर्स कनेका सिंगापुर कं० (केएससी) ने अपने उत्तर में प्रारंभिक निष्कर्षों पर टिप्पणी देते हुए प्राधिकारी को अपने निवेदन के अगोपनीय सारांश सहित कुछ अतिरिक्त जानकारी प्रस्तुत की ।
- (iii) प्राधिकारी ने उसका विश्लेषण करने के पश्चात् उसे त्रुटिपूर्ण पाया और कतिपय मुद्दों पर और अधिक स्पष्टीकरण मांगा । प्राधिकारी ने कनेका से कहा कि वह विशेषरूप से पी ओ आई के लिए कुछ अतिरिक्त जानकारी/स्पष्टीकरण प्रदान करे ।

निर्यातक द्वारा विभिन्न चरणों में प्रस्तुत आंकड़ों का विस्तार से विश्लेषण किया गया और उस पर चर्चा नीचे की गई है -

- (क) ऐसा पाया गया है कि विगत 2 वर्षों और पीओआई के दौरान मैसर्स केएससी के समग्र उत्पादन में गिरावट का रुख और विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में गिरावट रही है। उत्पादन में गिरावट के बावजूद कम्पनी ने ऐसा संकेत दिया है कि कच्चे माल के खपत मानदण्डों और उपयोगिता में जांच की अवधि के दौरान विगत वर्षों की तुलना में सुधार हुआ है। निर्यातक द्वारा इस विसंगति का कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं दिया गया है।
- (ख) प्राधिकारी को अपने उत्तर में मैसर्स कनेका ने अपने दिनांक 26.7.2002 के पत्र द्वारा स्पष्ट किया है कि उत्पादित माल की लागत तथा बेचे गए माल की लागत में 'परिवर्तनशील लागत' तथा 'नियम लागत' शामिल है और बिक्री लागत, सामान्य एवं प्रशासन लागत, ब्याज व्यय और मुद्रा हानि/लाभ जैसी ऊपरी खर्चा लागत शामिल नहीं है। निर्यातक ने और आगे स्पष्ट किया है कि परिवर्तनशील लागत में कच्चे माल की लागत (पैकिंग सामग्री की लागत सहित) तथा उपयोगिता लागत शामिल है और नियम लागतों में मुख्यरूप से उपभोज्य (उत्पादन), प्रत्यक्ष श्रम, मरम्मत तथा रखरखाव, भण्डारण प्रभार (कच्चे माल के लिए), आदि शामिल होते हैं। प्राधिकारी ने उत्पादन लागत तय करने हेतु आवश्यक लागत-अवयवों के संबंध निर्यातक द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण का विश्लेषण किया जो निम्नानुसार है-
- (i) निर्यातक ने बताया है कि घिसावट को 'मात्र विनिर्माण सुविधा' के प्रयोजनाथ लिया गया है। तदनुसार, इसका अर्थ यह हुआ कि पीएचपीजी पर संविभाजित सामान्य सुविधाओं संबंधी घिसावट को ध्यान में नहीं रखा गया है।
 - (ii) भण्डारण खर्चों को मात्र कच्चे माल के लिए लिया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि अन्तिम उत्पाद संबंधी भण्डारण खर्चों को ध्यान में नहीं रखा गया है।
 - (iii) उपभोज्य को केवल उत्पाद के लिए लिया गया है। तदनुसार, उपभोज्य वस्तुओं को पीएचपीजी संबंधी सामान्य सुविधाओं को विचारार्थ नहीं लिया गया है।
 - (iv) यद्यपि यह दावा कि पैकिंग खर्चों को परिवर्तनशील लागत में शामिल किया गया है, यह पाया गया है कि वर्ष 1999-2000 और 2000-01 संबंधी लागत विवरण-पत्र में दर्शाई गई लागत की तुलना में ड्रमों/कार्टन बाक्स की लागत नगण्य दर्शाई गई है।
 - (v) यह पाया गया है कि समग्र उत्पादकता में गिरावट के बावजूद निर्यात ने उपयोगिताओं की प्रति यूनिट लागत में समग्र गिरावट दर्शाई है। तथापि, कम्पनी ने बताया है कि प्रत्येक बैच के चक्रिक समय को कम करने के उद्देश्य से जब उत्पादकता अधिक हो तो तब यह आवश्यक हो सकता है कि उत्पाद को अपेक्षतया

और अधिक शीघ्रत से ठण्डा अथवा गर्म करने के लिए उपयोगिता लागत का प्रयोग किया जाए। तथापि, रिकार्ड में उलब्ध तथ्यों की जांच से निर्यातक द्वारा ऊपर दिए गए तर्क की विपरीत स्थिति का पता चलता है।

- (vi) कम्पनी मूल्य-ह्रास दर्शाने के लिए स्पष्ट विधि को अपना रही है। तुलन-पत्र से यह पाया गया है कि मौजूदा परिसम्पत्तियों के आधार पर पर्याप्त निपटान नहीं हुआ है बल्कि कम्पनी के संयंत्र तथा मशीनरी में काफ़ी वृद्धि हुई है। ऊपर दिए गए कारणों को देखते हुए यह निष्कर्ष किया जाता है कि कुल मूल्य ह्रास राशि पिछले वर्ष के आंकड़ों की तुलना कम नहीं हो सकती है। इससे यह पता चलता है कि कम्पनी ने जांच अवधि के दौरान उत्पाद पर पूरा मूल्यह्रास नहीं लगाया है।
- (vii) ब्याज लागत अन्य राजस्व (ब्याज-आय) को घटाने के बाद दर्शाई गई है। ब्याज आय का संबंध प्रचालन कार्यों से नहीं होता है, इसलिए, इसे उत्पाद के लागत-निर्धारण के लिए घटाया नहीं जा सकता है।
- (viii) कम्पनी ने किसी भी वित्तपोषण लागत का दावा नहीं किया है। कम्पनी कनेका जापान की एक 100% धारक कम्पनी है और कनेका जापान ने इक्विटी के रूप में इस कम्पनी में ————— मिलियन सिंगापुर डालर का निवेश किया है। इसके अलावा, ————— मिलियन राशि कनेका जापान को देय है। धारक कम्पनी द्वारा उपर्युक्त वित्तपोषण के कारण उसमें कोई भी ब्याज लागत शामिल नहीं है। निर्यातक ने यह संकेत दिया है कि इसकी एवज में कम्पनी कनेका जापान को लाभांश के अतिरिक्त ***** राशि का लाभ के रूप में भुगतान कर रही है। कम्पनी ने वर्ष 2001 के दौरान बिक्री लागत पर ***** का समग्र लाभ दर्शाया है। तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए प्राधिकारी का प्रस्ताव है कि इस प्रकार प्राप्त उत्पादन लागत में यथोचित लाभ को शामिल कर दें ताकि जांच अवधि के दौरान इस विचाराधीन उत्पाद का सामान्य मूल्य निर्धारित किया जा सके।
- (ix) प्राधिकारी ने कम्पनी द्वारा प्रस्तुत परिशिष्ट '7 एच' के संबंध में विशेषरूप से स्पष्टीकरण मांगा है क्योंकि जांच अवधि (पीओआई) तथा पिछले वर्षों में बिक्री-लागत उत्पादन-लागत की तुलना में कम दर्शाई गई है। कम्पनी ने यह दावा किया है कि बेचे गए माल की प्रति यूनिट लागत की गणना मासिक गतिशील औसत विधि के आधार पर की जाती है और ऐसा हो गया था कि प्रत्येक माह में उत्पादन-मात्रा उससे पिछले माह की शेष मात्रा से भी कम रही और माल की कम की गई कुल यूनिट लागत अगस्त माह को छोड़कर प्रत्येक माह में पिछले माह की शेष मात्रा की कुल यूनिट लागत से भी अधिक रही। ऐसा इसलिए हुआ ताकि उस अवधि के दौरान प्रत्येक महीने में बेचे गए माल की यूनिट लागत अगस्त माह को छोड़कर प्रत्येक महीने में उत्पादित माल की यूनिट लागत से कम रखी जाए और

इस प्रकार, उस अवधि के दौरान बेचे गए माल की औसत यूनिट लागत उसी अवधि के दौरान उत्पादित माल के औसत यूनिट से कम रहे ।

- (x) प्राधिकारी ने निर्यातक के निवेदन पर विस्तार से विश्लेषण किया है और पाया कि न केवल जांच की अवधि बल्कि पिछले वर्षों के लिए भी उत्पादन-लागत बेचे गए माल की लागत से अपेक्षितया अधिक रही । इस प्रकार, निर्यातक का यह दावा कि उपर्युक्त कारणों से बेचे गए माल की तुलना में उत्पादन-लागत अधिक रही, वास्तविक नहीं है ।
- (xi) प्रश्नावली के उत्तर में निर्यातक द्वारा निवेदनों में और बाद में उत्पादन लागत में पाई गई विसंगतियों/अनियमितताओं/कमियों के बावजूद प्राधिकारी ने सिंगापुर में सम्बद्ध माल के सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन-लागत जमा निर्यातक द्वारा प्रस्तुत लागत आंकड़ों पर आधारित बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक खर्चों तथा यथोचित आय को ध्यान में रखते हुए किया है ।
- (xii) तदनुसार, प्राधिकारी ने मैसर्स केएससी, सिंगापुर के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण ***** अमरीकी डालर प्रति किग्रा० पर किया है ।

11. निर्यात कीमत:

- (क) निर्यातक ने जांच की अवधि के दौरान भारत को होने वाले निर्यातों का लेन-देनवार ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं । मैसर्स के एस सी ने संबद्ध माल मैसर्स कनेका कारपोरेशन, जापान को बेच दिया और तब उन्होंने इसे मैसर्स सुमित एशिया प्रा० लि० को अन्त में उन्होंने इसे भारतीय ग्राहकों को बेच दिया । मैसर्स कनेका कारपोरेशन, जापान तथा मैसर्स सुमित एशिया प्रा० लि० से जानकारी प्राप्त की गई और उस पर भारत को किए गए निर्यात की निर्यात कीमत तथा जहाज से उतारते समय की लागत का निर्धारण करने हेतु उस पर विधिवत् विचार किया ।
- (ख) निर्यातक ने दावा किया कि छूट, वितरक के कमीशन, मूल कम्पनी के कमीशन, पैकिंग, अन्तर्देशीय भाड़े, बीमा, भण्डारण, हैण्डलिंग, विदेशी भाड़े, विदेशी बीमा तथा नौवहन प्रभारों का समायोजन किया जाए जिससे भारत को निर्यात की फैंक्ट्री द्वारा निर्यात कीमत का निर्धारण किया जा सके ।
- (ग) निर्यातक ने प्रत्येक चरण पर हुई प्रत्येक लेन-देन का बीजक मूल्य प्रस्तुत किया । प्राधिकारी ने मैसर्स के एस सी का बीजक मूल्य ले लिया है जो उत्पादक से किसी स्वतंत्र पार्टी को हुई प्रथम बिक्री के बारे में है और तब फैंक्ट्री द्वारा निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए छूट, पैकिंग, अन्तर्देशीय भाड़े, बीमा, भण्डारण, हैण्डलिंग, विदेशी भाड़े, विदेशी बीमे तथा नौवहन प्रभारों में समायोजन पर विचार किया ।
- (घ) यह पाया गया है कि अधिकांश मामलों में निर्यातक ने भारतीय ग्राहकों को 120 दिनों से 180 दिनों तक का ऋण प्रदान किया है । जैसा कि बीजको में ब्यौरा दिया

गया है, निर्यातक ने ग्राहको से 180 दिनों की अवधि के ऋण पर ब्याज वसूल किया है लेकिन 120 दिनों के ऋण पर ग्राहकों से कोई भी ब्याज वसूल नहीं किया है। प्राधिकारी ने फैक्ट्री-द्वार निर्यात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अलग-अलग समय पर 180 दिनों के लिए परिकल्पित ब्याज-दर के आधार पर 20 दिनों के लिए ब्याज का प्रावधान किया।

(ड.) तदनुसार, प्राधिकारी ने संबद्ध माल की फैक्ट्री-द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण ***** अमरीकी डालर प्रति किग्रा किया।

12. सिंगापुर के अन्य निर्यातक

(क) सामान्य मूल्य

सिंगापुर के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने प्रश्नावली में निर्धारित रूप तथा तरीके में प्राधिकारी को अपना प्रत्युत्तर नहीं भेजा। प्राधिकारी ने सिंगापुर के अन्य निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण रिकार्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम जानकारी के आधार पर किया है।

(ख) निर्यात कीमत

सिंगापुर के सभी अन्य निर्यातकों के संबंध में प्राधिकारी ने फैक्ट्री द्वारा निर्यात कीमत का निर्धारण उत्तरदाता निर्यातक (मैसर्स कनेका सिंगापुर कं० प्रा० लि०, सिंगापुर) द्वारा प्रस्तुत जानकारी के आधार पर किया। इसमें मैसर्स कनेका को छोड़कर सिंगापुर के सभी निर्यातकों से डी (-) पारा हाइड्रॉक्सी फिनाइल ग्लोसीन बेस(पीएचपीजी बेस) के लिए ***** अमरीकी डालर प्रति एमटी की दर से फैक्ट्री-द्वार निर्यात कीमत दी गई है।

13. चीन जनवादी गणराज्य

(क) सामान्य मूल्य:

प्राधिकारी ने धारा 9 क (1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं। चीन जनवादी गणराज्य के एक निर्यातक अर्थात् मैसर्स हेंग्डियान ग्रुप आर्गेनिक केमिकल कं० लि०, चीन जनवादी गणराज्य ने प्राधिकारी को उत्तर भेजा। यह पाया गया है कि मैसर्स हेंग्डियान ग्रुप आर्गेनिक केमिकल कं० लि० चीन जनवादी गणराज्य ने निर्धारित प्रपत्र में पूरी जानकारी प्रस्तुत नहीं की है। जानकारी बिना किसी अग्रोषण-पत्र के और केवल सफेद कागज पर और वह भी बिना हस्ताक्षरित रबड़ की मोहर वाली प्रस्तुत की गई। प्राधिकारी ने पाया कि प्रस्तुत जानकारी पूर्णतया अपर्याप्त और उचित हस्ताक्षर नहीं होने से अविश्वसनीय है। इस प्रकार उसे प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ रद्द कर दिया गया। इसलिए, प्राधिकारी यह निर्णय देता है कि चीन जनवादी

गणराज्य के किसी एक भी निर्यातक ने प्राधिकारी को नियमावली में दी गई व्यवस्था के अनुसार सहयोग नहीं किया है। घरेलू उद्योग ने उत्पादन की संरचित लागत के आधार पर चीन जनवादी गणराज्य के सामान्य मूल्य संबंधी जानकारी प्रस्तुत की है। चीन जनवादी गणराज्य के निर्यातकों के असहयोग को देखते हुए प्राधिकारी ने नियम 6(8) अर्थात् सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के आधार पर चीन जनवादी गणराज्य के सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

(ख) निर्यात कीमत

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, संबद्ध माल के लिए कोई समर्पित सीमा शुल्क वर्गीकरण नहीं किया गया क्योंकि उसे अन्य श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। तदनुसार, चीन जनवादी गणराज्य के मामले में भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण सीमा शुल्क दैनिक सूचियों से संकलित आंकड़ों के आधार पर किया गया है। निवल निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए भाड़े, समुद्री बीमे, कमीशन, पोत हैंडलिंग, आदि प्रभारों के समायोजन पर घरेलू उद्योग के दावों के अनुसार विचार करने का प्रस्ताव है।

च. पाटन - सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत में तुलना

14. तुलना संबंधी नियमावली में निम्नानुसार प्रावधान हैं:-

- (क) " पाटन मार्जिन तय करते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के समान स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी और यथा संभव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी।
- (ख) जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी। अंतर में शामिल हैं बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, भौतिक विशेषताएं तथा अन्य अंतर जो कीमत की तुलना को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए गए हैं।"
- (ग) प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण को विनियमित करने वाले सिद्धांतों को अपनाने की पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 में यथा निर्धारित संगत नीति का अनुसरण किया है। जैसाकि ऊपर बताया गया है, सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के सभी निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन का मूल्यांकन किया है जो निम्न तालिका में दिया गया है:-

देशवार निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य (डालर/किग्रा०)	निर्यात कीमत (डालर/किग्रा०)	पाटन मार्जिन (निर्यात कीमत का %)
सिंगापुर			
(i) मै० कनेका सिंगापुर क०(प्रा०)लि०	XXXX	XXXX	10.30
(ii) अन्य सभी निर्यातक	XXXX	XXXX	58.75
चीन जनवादी गणराज्य सभी निर्यातक	XXXXXX	XXXX	97.20

उपरोक्त पाटन-मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है ।

छ. क्षति एवं कारणात्मक संबंध :

15. पाटनरोधी नियमावली का नियम 11 निम्नानुसार है :-

"क्षति का निर्धारण"

- (i) निर्यातक देशों से आयात के मामले में, निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे की जांच परिणाम के अनुसार प्रकार रिकॉर्ड करेंगे कि भारत में ऐसी वस्तु के आयात से किसी स्थापित उद्योग की क्षति अथवा महत्वपूर्ण क्षति की आशंका उत्पन्न होती है अथवा उससे भारत में किसी उद्योग की स्थापना को वास्तविक रूप से बाधा पहुंचती है ।
- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग की क्षति, घरेलू उद्योग को क्षति की आशंका, घरेलू उद्योग की स्थापना में महत्वपूर्ण बाधा तथा पाटित आयात एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण सभी संगत साक्ष्यों अर्थात् सदृश्य वस्तुओं के घरेलू बाजार में पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत पर उनके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव समेत इन नियमों के अनुबंध-II में निर्दिष्ट सिद्धांतों के अनुसार करेंगे ।

16. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में निर्दिष्ट क्षति के निर्धारण संबंधी सिद्धांतों में निम्नलिखित व्यवस्था है :

- (i) क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु की घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव, और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होंगे ।
- (ii) पाटित आयातों की मात्रा की जांच के समय, उपर्युक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में या तो पूर्ण अर्थों में अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के

अनुरूप महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। नियम 19 के उप-नियम (2) में यथानिर्दिष्ट कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में, निर्दिष्ट प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमत को उस स्तर तक दमन करने अथवा रोकने का है जो कि अन्यथा काफी अत्यधिक बढ़ गई होती।

ज. क्षति का संयची मूल्यांकन

17. (क) उपरोक्त नियम 11 के अधीन अनुबंध 11 (iii) में व्यवस्था है कि "ऐसे मामले में जहां किसी उत्पाद का आयात पाटनरोधी जांच के अधीन एक से अधिक देशों के साथ-साथ किया जा रहा है, निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन संयची आधार पर तभी करेंगे जब कि वे निर्धारित करते हैं कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत की प्रतिशतता के रूप में व्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है तथा प्रत्येक देश से आयात की मात्रा समान वस्तु के आयात का तीन प्रतिशत है अथवा जहां अलग-अलग देश का निर्यात तीन प्रतिशत से कम है, आयात संयची रूप से समान वस्तु के आयातों का सात प्रतिशत से अधिक परिकलित होता है तथा आयातों का संयची निर्धारण आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों को ध्यान में रखते हुए उचित है।"

(ख) प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन तथा संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा उन पर निर्धारित सीमा से अधिक है। सिंगापुर तथा चीन जनवादी गणराज्य से आयातों के प्रभाव का संयची मूल्यांकन उचित है क्योंकि इन देशों से निर्यात कीमतें भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कीमतों से सीधे ही प्रतिस्पर्धा कर रही थी तथा इससे यहां के घरेलू उत्पादकों को विस्थापित हो रहे थे।

18. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उक्त नियमावली के अनुबंध-II(iv) के अनुसरण में प्राधिकारी ने ऐसे संकेतकों पर विचार किया जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हों जैसे उत्पादन, क्षमता का उपयोग, बिक्री की मात्रा, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

19. घरेलू उद्योग को क्षति दर्शाने वाले विभिन्न मापदंड निम्नलिखित हैं -

(क) आयातों की मात्रा

सम्बद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा संबंधी सूचना सीमाशुल्क दैनिक सूचियों से संकलित आंकड़ों पर आधारित है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान सम्बद्ध देशों सम्बद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में 1999-2000 की तुलना में 36.77% की वृद्धि हुई है।

(ख) निर्यात कीमत

इसके अतिरिक्त जांच अवधि के दौरान, 1999-2000 की तुलना में संबद्ध देशों से हुए निर्यात की औसत निर्यात कीमत में भी गिरावट रही है। यह पाया गया है कि जांच अवधि के दौरान भी निर्यात कीमत में और अधिक गिरावट आ गई है।

(ग) भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से और सम्बद्ध देश (श्री) से आयात में परिवर्तन

प्राधिकारी यह पाते हैं कि मै0 डीओएल भारत में सम्बद्ध वस्तु के विनिर्माण में नया प्रवेशी है और सम्बद्ध देशों के निर्यातकों ने भारत में सम्बद्ध वस्तु का पाटन तेज कर दिया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि घरेलू उद्योग को कोई बाजार हिस्सा न मिले इससे उद्योग स्थापना को इसकी प्रारंभिक अवस्था में ही वस्तुपरक बाधा पहुंची है।

(घ) याचिकाकर्ता का उत्पादन और क्षमता उपयोग :

जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता ने अपने स्थापित क्षमता के उपयोग का 32% लक्ष्य प्राप्त किया है। देश में मांग को ध्यान में रखते हुए यह घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किए जा सकने वाले उपयोग से काफी कम है बशर्ते निर्यातकों ने पाटन का सहारा नहीं लिया होता।

(ङ) बाजार हिस्से में अपर्याप्त उपलब्धि

घरेलू उद्योग प्रारंभिक अवस्था में हैं, इस प्रकार, इसके कोई पूर्व रुख उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन घरेलू उद्योग देश में सम्बद्ध वस्तु की काफी मांग होने के बावजूद सम्बद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण अपनी बिक्री को बढ़ाने में असमर्थ रहा है।

(च) बिक्री कीमत में कमी, कीमत में गिरावट, कीमत में कटौती, कीमत में कमी अथवा कीमत ह्रास:

घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण करने के उद्देश्य से सम्बद्ध वस्तु की मासिक बिक्री प्राप्ति का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण नीचे दिया गया है :-

अवधि	बेची गई मात्रा/किग्रा.	निवल बिक्री प्राप्ति (रु0/किग्रा.)
अप्रैल, 2001
मई, 2001
जून, 2001
जुलाई, 2001
अगस्त, 2001
सितम्बर, 2001

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि जांच अवधि के दौरान मासिक औसत बिक्री प्राप्ति अप्रैल, 2001 के दौरान हुई.....रुपए/किग्रा० से गिरकर सितम्बर, 2001 में.....रुपए/किग्रा० रह गई जो जांच अवधि के भीतर ही लगभग 120% गिरावट दर्शाती है। यह मुख्यतः घरेलू उद्योग द्वारा वाणिज्यिक उत्पादन आरम्भ करने के पश्चात् निर्यातकों द्वारा औसत आयात कीमत में की गई कमी के कारण हुई है।

(छ) **गवाई गई संविदाओं अथवा गिरती हुई बिक्री का साक्ष्य :**

यह देखा गया है कि निर्यातकों द्वारा निर्यात कीमत में तीव्र गिरावट के कारण घरेलू उद्योग उन कीमतों पर संविदाएं/आदेश नहीं प्राप्त कर सका जिस कीमत पर लगाई गई पूंजी पर एक उचित लाभ का तो प्रश्न ही नहीं है यह उत्पादन की लागत भी वसूल नहीं कर सका। याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु को केवल बड़ी हानि पर ही बेच सका था।

(ज) **रोजगार**

घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि चूंकि यह उद्योग अभी प्रारंभिक अवस्था में है, इसलिए अनुचित व्यापार प्रक्रिया में सुरक्षा करना महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है अन्यथा इसमें कार्यरत कर्मचारी अपना रोजगार गवा देंगे।

(झ) **लाभप्रदत्ता**

यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु की बिक्री निर्यातकों द्वारा प्रस्तावित कीमत के बराबर की कीमत पर कर सका। इससे बहुत बड़ी हानि हुई है।

(ट) **विस्तार**

घरेलू उद्योग ने अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने की योजना बनाई है। तथापि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपनी मौजूदा क्षमता का उपयोग भी नहीं कर सक रहा है।

20. पाटित आयातों का कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या आयातों के पाटन से कीमत में भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में बहुत ज्यादा गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों के प्रभाव से कीमतों को उल्लेखनीय स्तर तक घटाना पड़ेगा। भारत में घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने ऐसे संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति को प्रभावित करते हैं, जैसे उत्पादन, बिक्री, भंडार, लाभप्रदता, शुद्ध बिक्री आय, इत्यादि। साक्ष्य की जांच करने पर यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग की प्रायोगिक तौर पर की गई शुरुआत के तुरंत बाद ही कीमत में तेजी से कटौती हुई थी और बाद में जांच अवधि के दौरान इसमें और भी तेजी से गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को अपनी वर्तमान क्षमता का उपयोग करने से रोका गया साथ ही क्षमता उपयोग काफी कम हुआ है। तथापि, प्राधिकारी के पास उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार क्षति तथा

अगली क्षति होने के भय को बतलाने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण मापदण्ड कीमत कटौती का साक्ष्य ही है। जांच अवधि के दौरान आयातों में, विशेष रूप से चीन जनवादी गणराज्य से होने वाले आयातों में हुई वृद्धि की दर तथा घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति में आई संगत गिरावट की दर ऐसे मापदण्ड हैं जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर यह निर्धारित किया गया है कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान क्षति हुई है और आगे भी क्षति होने का भय है।

21. वर्तमान याचिका मुख्य रूप से पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में है जिसके कारण उद्योग की स्थापना में वास्तविक बाधा हो रही है। चूंकि याचिकाकर्ता अपने उत्पादन का निपटान भारतीय बाजार में करने का प्रयास कर रहा है और संबद्ध देशों से होने वाले आयात के कारण घरेलू उद्योग के उत्पादन के वाणिज्यिकरण में रुकावट आ रही है, इसलिए आयातों के कारण उद्योग की स्थापना में वास्तविक बाधा हो रही है। हालांकि इस 'नए उद्योग' अर्थात् मै0 दौराला आर्गेनिक्स लि0 ने हाल ही में उत्पादन शुरू किया है तथापि, इस उद्योग को संबद्ध देशों से होने वाले निर्यातों द्वारा पाटित आयातों की वजह से बाजार में मिलने वाला स्थान प्राप्त करने में मुश्किल हो रही है। घरेलू उद्योग क्षमता उपयोग के एक संतोषजनक स्तर को प्राप्त करने तथा बाजार में अपना स्थान बनाने में असमर्थ है क्योंकि उसे प्रारम्भिक चरण में ही घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित कीमत पर होने वाले आयातों से वास्तविक बाधा होने का खतरा हो रहा है।

ठ. कारणात्मक संबंध

- 22 इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति (वास्तविक/खतरा/वास्तविक बाधा) हुई थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा है :-
- (i) चीन जनवादी गणराज्य तथा सिंगापुर से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु के भारी आयात के कारण घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन अलाभकारी कीमत पर बेचने के लिए बाध्य होना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत कटौती की स्थिति उत्पन्न हुई है।
 - (ii) चीन जनवादी गणराज्य तथा सिंगापुर से हुए आयातों के कारण भारतीय बाजार में इस उत्पाद की कीमत इस हद तक कम हो गई कि घरेलू उद्योग द्वारा भारत में संबद्ध वस्तु की बिक्री से अपने उत्पादन की पूरी लागत तथा एक यथोचित लाभ प्राप्त नहीं किया जा सका।
23. इसलिए, प्राधिकारी उपरोक्त तथ्यों से यह बात नोट करते हैं कि संबंधित देशों से आयात घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से कम कीमतों पर हुआ है। इसके अलावा, भारत में जो आयात हुआ है वह घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमतों से कम कीमतों पर हुआ है, इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय नुकसान उठाना पड़ रहा है। याचिकाकर्ता को अपने क्षमता उपयोग के स्तर को बढ़ाने से भी रोका गया था। ये मापदण्ड संयुक्त एवं

संचयी रूप से यह स्पष्ट करते हैं कि पाटित आयातों की वजह से याचिकाकर्ता को वास्तविक क्षति पहुंची है ।

उ भारतीय उद्योग के हित

24. सामान्यतया, पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन को खत्म करना है, जोकि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है और नये सिरे से भारतीय बाजार में एक मुक्त तथा निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की स्थिति को कायम करना है जोकि देश के आम हित में हो ।
25. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों को लगाने से संबद्ध सामान का उपयोग करते हुए उत्पादित वस्तुओं के मूल्य स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है और परिणामतः इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धा पर भी कुछ प्रभाव पड़ सकता है । तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारत में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी । इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों से होने वाले पाटन के अनुचित फायदे खत्म होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा तथा संबद्ध वस्तु के उपभोक्ता के लिए व्यापक विकल्प की उपलब्धता में मदद मिलेगी ।
26. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से चीन जनवादी गणराज्य तथा सिंगापुर से होने वाले आयातों में किसी तरह की कोई कमी नहीं आएगी और इसलिए इससे उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । उपभोक्ता अब भी दो या इससे अधिक आपूर्ति के स्रोत रख सकेंगे ।

ठ. निष्कर्ष

27. प्राधिकारी उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि:-
- (i) चीन जनवादी गणराज्य तथा सिंगापुर से डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस का भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है ।
 - (ii) भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और इसे और आगे भी क्षति होने का खतरा है ।
 - (iii) क्षति होने के कारण घरेलू उद्योग को डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस के विनिर्माण हेतु नए उद्योग स्थापित करने में वास्तविक बाधा हो रही है ।
 - (iv) संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण संचयी रूप से क्षति हुई है ।

28. प्राधिकारी यह आवश्यक मानते हैं कि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करने के उद्देश्य से सबद्ध देशों से होने वाले डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन को उपरोक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम के पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना जाच अवधि के दौरान निर्धारित याचिकाकर्ता कम्पनी की क्षति रहित कीमत से करने का प्रस्ताव है।
29. तदनुसार प्राधिकारी यह सिफारिश करते हैं कि चीन तथा सिंगापुर के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस, जिसे डी (-) अल्फा पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन, डी (-) अल्फा पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस डी (-) पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन, पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस, पारा हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन डी (-) पी - हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन बेस डी (-) पी - हाइड्रोक्सी फिनाइल ग्लाइसिन के नाम से भी जाना जाता है और जो सीमाशुल्क शीर्षक 2942 के अंतर्गत आता है, के सभी आयातों पर अन्तम निर्धारण होने तक निश्चित दर से पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क की राशि निम्नलिखित सारणी के कॉलम 2 में उल्लिखित राशि तथा आयातों के प्रति किग्रा० पहुँच मूल्य के बीच का अंतर होगा जिसे नीचे उल्लिखित देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु, जो सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 29 के अंतर्गत आती है, के सभी आयातों पर लगाया जाएगा :-

निर्यातक/देश	राशि (अमरीकी डालर प्रति किग्रा०)
<u>चीन जनवादी गणराज्य</u>	
सभी निर्यातक	22.42
<u>सिंगापुर</u>	
1) मै० कनेका सिंगापुर क० (प्रा०) लि०	20.88
2) सिंगापुर के अन्य निर्यातक	22.42

30. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुँच मूल्य का मूल्यांकन सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत निर्धारित सीमा शुल्कों और सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमा शुल्कों द्वारा किया जाएगा।
31. उपरोक्त के अध्यक्षीन, प्राधिकारी दिनांक 31 दिसम्बर, 2001 के प्रारंभिक जाच परिणामों की पुष्टि करता है।

- 32.** इस आदेश के खिलाफ कोई भी अपील उक्त अधिनियम के अनुसार सीमा-शुल्क, उत्पाद शुल्क और स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी ।

एल. बी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th September, 2002

Final Findings

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base (PHPG-Base) originating in or exported from China PR and Singapore—Final Findings.

No. 51/1/2001-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995 thereof

A PROCEDURE

- 1 The Procedure described below has been followed
 - (i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified preliminary findings vide Notification No 51/1/2001-DGAD dated the 1st October 2001 with regard to Anti Dumping investigations concerning imports of D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base originating in or exported from China PR and Singapore and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication
 - (ii) The Authority forwarded a copy of the Preliminary Findings to known interested parties who were requested to furnish their views if any, on the Preliminary Findings within forty days of the date of the letter
 - (iii) The Authority also forwarded a copy of the Preliminary Findings to the Embassies/High Commissions of subject countries in New Delhi with a request to furnish their views on the Preliminary Findings
 - (iv) The Authority held a public hearing on 10th April 2002 to hear the interested parties orally which was attended by representatives of the domestic industry importers and exporters from Singapore. The parties attending the

public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions thus received from interested parties have been considered by Designated Authority in this finding;

- (v) The Authority made the public file available to all interested parties containing non-confidential version of the evidence submitted by various interested parties, for inspection, upon request;
- (vi) Arguments raised by interested parties before announcing of Preliminary Findings, which have been brought out in the Preliminary Findings notified earlier have not been repeated herein for sake of brevity. However, arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt with in the Preliminary Findings and/or these findings.
- (vii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have also been duly considered in these findings.
- (viii) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2001 to 30th September 2001.
- (ix) **** in the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the Rules.

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY:

2 VIEWS EXPRESSED BY EXPORTERS

M/S. KANFKA SINGAPORE CO.(PTE) LTD.:

- (a) When the dumping from China started, which is stated as February 2001 DOL had not started production yet. DOL says it commenced production from April 2001
- (b) DOL produces only less than 20 MT/month, it could be said that DOL's sales quantity is immaterial comparing to quantity of imports and so that so called "volume effect" factor of causal link, which is one of the required criteria to establish injury and dumping, is not satisfied
- (c) The exporter has claimed to be serving Indian health industry for more than decades with the product PHPG Base is an inevitable part to produce an important antibiotic called Amoxicillin, which is major application of PHPG Base and Amoxicillin is designated as, so called essential drug by World Health Organization or WHO and it is known as relatively safe, effective and inexpensive life saving drug. However, the cost increases due to the anti

dumping duty shall be reflected on to the selling price of Amoxicillin then it is the patient who comes to bear the cost increase

- (d) Amoxicillin production for domestic consumption is estimated to be around 1200-1300 MT per year and it is equivalent of around 600 MT or more per year of PHPG Base and still increasing. This quantity is obviously more than the capacity of DOL which is claimed to be 500MT
- (e) The exporter has claimed that their technology is the most advanced and efficient state of the art IMMOBILIZED ENZYME method utilizing gene technology (recombinant of DNA) while their technology is conventional CHEMICAL RESOLUTION method and therefore cost structure is completely different
- (f) Further the exporter has submitted that they are one of the largest producer of PHPG Base and PHPG Dane Salt in the world and regarded as one of the most reputable and reliable supplier of the products, in a sense of both quantitative and quality so that customer perception should not be the same at all in world wide basis. M/s Torrent Gujarat Biotech Ltd has also submitted that
 - i) The quality of PHPG Base of M/s Daurala Organics Ltd (DOL) is not consistent and the product is yet to be stabilized for its quality. The quality of Amoxicillin Trihydrate is directly related to the quality of PHPG Base
 - ii) In case of M/s DOL the quality of the product is not yet proven in the market as regarding its yield stability of final product etc
- (g) The name of DOL is not heard in the market other than India. On the other hand, we have been producing PHPG Base for more than 20 years with current capacity of around 3000 MT per year and been supplying PHPG Base and PHPG Dane Salt to the customers all over the world
- (h) As stated during the oral hearing by the government that the landed value of imports determined by the government of US\$24.83 is based on the production cost of DOL might mean either their production cost would be significantly higher than ours or they reserved a huge profit margin. If the case would be the former one, we wonder if DOL might have had been able to launch their business even there would not have price reduction from China which started on February, 2001 (according to DOL's petition), solely due to its high cost
- (i) At the time DOL filed petition total of tax and duty applicable to PHPG Base importing in to India is around 41%. Thus US\$24.83

works out to be US\$17 60 Kg as CIF basis. This price is equivalent to the worldwide market price of around 1995-1996 period. The product has been in the market since around 1970 and current market is around 8000 MT per year worldwide basis. Price of the product has been determined by market with supply demand balance. Our price for India is determined by such price mechanism of market and not discriminatory at all. While the world wide market price has been on down trend since then if DOL regards their business can not be viable with the price under US\$17 60/ Kg, regardless of whether China started lowering price from February 2001 or not. DOL's business has had been not viable since 1995-96 and there is no issue of anti dumping. Considering such situation if anti dumping duty would be imposed it means Indian Amoxicillin producer should buy PHPG Base at much higher level than worldwide market price and therefore it would end up with higher cost on Indian social welfare.

- (j) Many PHPG Base producers using chemical resolution method such as DSM- Andeno of Holland, Nippon Kayaku of Japan, Ward Blenkinsop U.K., Plotfarmaco Italy, Bracco Italy etc. had faded out in the past due to its higher production cost.
- (k) The exporter has desired to give an opportunity to continue to serve the health industry of India with their duty of supplying PHPG Base, the inevitable intermediate of Amoxicillin, an essential and life saving drug for people with excellent and stable quality and stable supply based on our huge capacity.

3 VIEWS OF DOMESTIC INDUSTRY

- (i) Only two exporters have responded to the Authority. The responses filed by these exporters were grossly insufficient and inadequate, as held by the Designated Authority in the preliminary findings also. The public file does not indicate that these exporters have completed the deficiencies pointed out by the Designated Authority in the preliminary findings. Therefore the responses of the exporters should be rejected for the final determination also and the Authority would be justified in proceeding with the best available information in accordance with the Rules in the absence of complete information in the form and manner prescribed. M/s DOL has requested the Designated Authority to confirm the preliminary findings in this regard.
- (ii) With regard to Singapore the petitioner has pointed out that the exporter has not filed complete questionnaire response. Further the non-confidential version of the response is grossly deficient. No proper non-confidential summaries have been provided by the

exporter. They have requested the Designated Authority to direct the exporter to disclose information appropriately. In absence of meaningful non-confidential submission by the exporter, Domestic Industry will not be in a position to submit proper response of the submission made by the exporter. Should the exporter fail to provide proper and adequate non-confidential summaries, the response is required to be rejected.

- (iii) The Domestic Industry has submitted that they have provided detailed information to the Designated Authority clearly establishing that the Domestic Industry has suffered injury and dumped imports are causing material retardation to the establishment of industry. The same has been taken note by the Designated Authority and the preliminary findings are quite elaborate with regard to injury to the Domestic Industry.
- (iv) The Designated Authority should consider the following points while assessing the injury analysis.
 - a The injury to the Domestic Industry is required to be assessed cumulatively
 - b The imports from the subject countries have increased in absolute terms in spite of the fact that commenced commercial production of the Domestic Industry has already commenced.
 - c The imports from the subject countries have prevented the Domestic Industry from getting its due market share, which would have otherwise been achieved by the Domestic Industry, given that the Domestic Industry had just commenced commercial production
 - d The Domestic Industry was not able to achieve the level of production, which it could have otherwise achieved in the absence of dumping
 - e The sales of the Domestic Industry have not grown as per projections. Even though the demand of the product has increased, the Domestic Industry was not able to increase its sales
 - f. Even though the Domestic Industry had entered the market very recently it was forced to lower its selling prices due to dumped imports undercutting its prices
 - g The imports from the subject countries were undercutting the prices of the Domestic Industry

- h The Domestic Industry has very recently commenced commercial production. The industry was expected to increase employment in the product given that its production, sales and market share should have increased. However, the Domestic Industry was not able to effectively increase its employment.
- i The imports were underselling the Domestic Industry. Resultantly the Domestic Industry was forced to incur heavy financial losses.

The Domestic Industry has submitted that all these parameters, collectively and cumulatively establish that the Domestic Industry suffered material injury and further imports were causing material retardation to its establishment. The Domestic Industry thus suffered injury from the imports.

- (v) The Domestic Industry has submitted that the final duties may also be recommended in terms of US\$ only so that erosion in the quantum of protection does not take place on account of changes in the exchange rate. Further the duties may kindly be recommended in terms of benchmark pricing as was done in the Preliminary Findings.
- (vi) In response to the argument raised by the exporters that DOL has commenced commercial production from April 2001 whereas the dumping started in Feb 2001 M/s DOL has submitted that the present petition is against dumped imports from China and Singapore which are causing material retardation to establishment of industry. Thus the exports which commenced in Feb 2001 materially retarded establishment of the company.
- (vii) In response to the argument that Domestic Industry would not be able to meet the demand the Domestic Industry has submitted that Hon'ble CEGAT held in the matter of EPDM Rubber that inability to meet out demand is not a pre-requisite condition for domestic industry for seeking relief under Anti dumping laws.
- (viii) The Domestic Industry in the instant case is an infant stage which had recently commenced commercial production. While the industry is not able to produce to the extent of capacity created the industry cannot think of further enhancing the capacity.
- (ix) Even by their own admission we can produce to the extent of 500 MT as against the demand of 600 MT.
- (x) It is our understanding that there are some imports of the product against exports. Since these would continue to be met out of

imports (due to benefit of duty granted to them) the demand to such an extent is not effectively available to the Domestic Industry

- (xi) Not with standing above it is submitted that we are committed to meet the requirements of the customer and would take all necessary steps, in the right direction should the market remain competitive and we be allowed reasonable price for our product
- (xii) In response to Exporters argument that the sales quantities of the Domestic Industry are insignificant compared to imports We agree with Kaneka and that is our entire grievance that we have not been able to sell the newly introduced produce in spite of vast market due to presence of dumped imports in the market In fact this statement of Kaneka itself establishes that the injury is caused to the Domestic Industry from the dumped imports
- (xiii) Kaneka has admitted that price of its product is market driven This implies that their export price to India was dependent upon the prices in India When Chinese producers lowered their prices this forced Kaneka also to review supplies

Kaneka has argued that prices are identical universally This is inconceivable In a way Kaneka has argued that the prices of product world over are the same

4 VIEWS OF IMPORTERS:

M/S TORRENT GUJARAT BIOTECH LTD.:

M/s Torrent Gujarat Biotech Ltd one of the importers of the subject goods, has submitted that -

- a D(-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base (PHPG Base) is an important ingredient for manufacturing Amoxycillin Trihydrate The total consumption of PHPG Base in the country is more than 2200/2500 MT per annum
- b Penicillin based Anti Biotics and in particular Amoxycillin Trihydrate is the cheapest drug widely used in most of the developing /developed countries
- c DOL has started the production of PHPG Base recently and the quality of the product is not yet proven in the market as regarding its yield stability of final product etc
- d DOL is the only producer of this product in India and imposing of Anti Dumping Duty on the subject material will lead to Monopolistic situation in the domestic market and the Indian

manufacturers of Amoxycillin Trihydrate will be compelled to either Import material with Anti Dumping Duty or would be required to use locally available material whose quality control related parameters viz required minimum yield, impurities and stability of the product are yet to be established/proven

e Accordingly the importer has submitted that .

- (1) There is no justification for fixing of the Anti dumping duty.
- (2) It is incorrect to conclude that PHPG Base has been exported to India from China PR and Singapore, below its normal value as the same product is offered at almost same price by European suppliers too.
- (3) It is incorrect to conclude that the domestic Industries has suffered material injury on account of imports from China PR and Singapore.
- (4) The importer has further requested that in the interest of domestic Amoxycillin manufacturers and in the national interest the proposal of levying Anti Dumping Duty of PHPG Base imported from China P R and Singapore be dropped

5. **VIEWS OF INTERESTED PARTIES ON DISCLOSURE STATEMENT ISSUED BY THE DESIGNATED AUTHORITY:**

(i) **VIEWS OF DOMESTIC INDUSTRY:**

Submissions made by M/s Kanaka, Singapore^{is} inadequate and they have not provided any meaningful Non confidential submission to enable us defend our interests before the Designated Authority. The Authority has already pointed number of anomalies/contradictory statements made by the exporters. Once the Authority had identified the issues which are critical for determination of cost of production of the subject material, Designated Authority should have rejected the entire submission of the exporter with regard to the costing and determine the normal value under Rule 6(8) i.e, best available information

(ii) **VIEWS OF IMPORTERS:**

M/S TORRENT GUJARAT BIOTECH LTD:

- (a) The bulk drug Amoxycillin which they are manufacturing, is a life saving drug being used in several formulations as antibiotic for human consumption. In the manufacture of this bulk drug D(-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base is an

ingredient and any quality variation of this product will affect the final finished product

- (b) For the pharmaceutical industry there are stringent quality control checks for use of raw materials which goes into the quality of final finished product Domestic Industry's view of "no significant difference" cannot be accepted as the slight variation in the quality of raw material will affect the quality of finished product which cannot be accepted by the end user
- (c) The petitioners view that unqualified quality difference does not make the product different is not correct This raw material is basically used for the life saving drug and any sort of compromise on quality cannot be considered at all
- (e) The view of the petitioner that they have got repeated orders is not necessarily approval and acceptability of the quality of the product

(iii) **VIEWS OF EXPORTERS**

M/s Kaneka Singapore one of the exporter of the subject goods in response to the Disclosure Statement vide their letter dated 30th August 2002 sought clarifications with regard to the methodology adopted for calculation of the Normal Value and Export Price before submitting their views on the Disclosure Statement Reply to the same was sent to M/s Kaneka and they were advised to furnish their comments on the Disclosure Statement with in the extended period However no reply was received from M/s Kaneka on the same within the given time

EXAMINATION BY THE AUTHORITY:

The Authority has considered all submissions made by the interested parties on merits and in accordance with the Rules

C PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- 6 D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base is also known as
 - (a) D (-) ALPHA PARA HYDROXY PHENYL GLYCINE D (-) ALPHA PARA HYDROXY PHENYL GLYCINE BASE D (-) PARA HYDROXY PHENYL GLYCINE, PARA HYDROXY PHENYL GLYCINE BASE PARA HYDROXY PHENYL GLYCINE, D (-) P – HYDROXY PHENYL GLYCINE BASE D (-) P – HYDROXY PHENYL GLYCINE
 - (b) Petitioner has claimed that predominantly 'D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base' (also to be read as per above mentioned synonyms) i.e. the

'subject goods' (herein after also referred as 'PHPG') is imported into India which is converted in-situ to "D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Methyl Potassium Dane Salt " (herein after referred as 'PHPGDS') by various importers / manufacturers and used for the production of Amoxycillin and Cefadroxyl (i.e. bulk drugs)

- (c) All types of PHPG are classified in chapter heading 29 42 of Schedule I of the Customs Tariff Act. As per ITC eight digit classification PHPG Base is classified in others category i.e. in 2942 0029. The investigation is against the product under consideration irrespective of the classification under which it is imported. Customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation. The Authority to confirm the Preliminary Findings on product under consideration

7 **LIKE ARTICLES:**

Rule 2(d) of the Anti-Dumping Rules specifies that "Like Articles" means an Article which is identical or alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an Article another article having characteristics closely resembling those of the articles under examination

(a) **VIEWS OF EXPORTER:**

M/s Kanaka, one of the exporters of the subject goods from the subject countries has stated that PHPG Base is produced by their unique immobilized enzymatic method by them which is different from the Indian and Chinese producers mentioned in the petition. Indian and Chinese production method is mostly conventional chemicals method and production costs of their immobilized enzymatic method is much lower than such chemical method.

(b) **VIEWS OF IMPORTER**

M/s Torrent Gujarat Biotech Ltd, one of the importers of the subject goods have submitted that the quality of PHPG Base of M/s Daurala Organics Ltd (DOL) is not consistent and the product is yet to be stabilized for its quality. The quality of Amoxycillin Trihydrate is directly related to the quality of PHPG Base.

Until now PHPG Base is being imported from Europe, Singapore and China PR, as no reliable domestic source of material is available ensuring consistent quality and quantity supply.

(c) **VIEWS OF DOMESTIC INDUSTRY:**

- (i) The petitioner has claimed that there is no significant difference in the PHPG base imported from the subject countries and the PHPG

Base produced by the Indian Industry in terms of technology, functions and uses, marketing, pricing and customer perception. The PHPG Base produced by the Domestic Industry and the PHPG Base exported from subject countries is technically and commercially substitutable with each other. PHPG Base produced by the Domestic Industry is a like article to PHPG Base imported from subject countries within the meaning of the Anti Dumping Rules

- (ii) In response to the submission from the exporter from Singapore that technology used by them is different from Indian and Chinese producers M/s DOL has submitted that whatever be the production technology, the subject goods are like article. The exporter has argued that the difference in technology or production process implied that the two are not like articles. The PHPG Base produced by the Indian industry and the PHPG Base exported from subject countries are substitutable with each other. With regard to dumping, the issue of dumping does not concern differences in production technology with regard to the argument on the quality raised. M/s. DOL has submitted that
- (a) The Designated Authority has held in several cases that unquantified quality difference does not make the product different. At the best, an allowance can be claimed for the quantified difference in quality.
 - (b) The CEGAT has held in the matter relating to Anti dumping duty on EPDM rubber that quality is not a relevant consideration to anti dumping investigation. It is not even the claim of these interested parties that the product being produced by us is not a like article to the product under consideration (which is the sole relevant consideration).
 - (c) The claim of the exporters and importers is that the imported product is superior in quality. Our claim however is that the same is being sold cheaper than not only their normal value but also below our selling price.
 - (d) They have got repeated orders for some of the large consumers of the subject goods in India and they have found the quality of our product not only acceptable but also satisfactory.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY:

The Authority in the Preliminary Findings had determined that the D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base (PHPG Base) produced and sold by them and those imported from the subject countries are being

used interchangeably by the customers in India. The Authority confirms its Preliminary findings in this regard and holds that the PHPG Base manufactured by the Domestic Industry and exported by the subject countries are like article under Rule 2 (d) supra.

8 DOMESTIC INDUSTRY:

- (i) As per Rule 2(b) of the Anti Dumping Rules 'domestic industry means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry.

- (ii) The definition of Domestic Industry given above is further clarified by Rule 5 of Rules which reads as follows -

----- the application shall be deemed to have been made by or on behalf of the domestic industry if it is supported by those domestic producers whose collective output constitute more than fifty percent of the total production of the like article produced by that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition as the case may be to the application.

- (iii) The petition has been filed by M/s Daurala Organics Limited Daurala Meerut U P. The petitioner is the sole producer of the subject goods in India. Accordingly the petitioner satisfies the criteria of standing to file the petition on behalf of the Domestic Industry in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra.

D NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN:

- 9 Under Section 9A(1)(c) normal value in relation to an article means -

- (i) The comparable price in the ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6) or
- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in domestic market of the exporting country or territory or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory such sales do not permit a proper comparison the normal value shall be either -

- (a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (b) The cost of production of the same article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-Section(6).

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The Authority provided opportunity to the exporters from subject countries to furnish information relevant to the investigations and offer comments, if any, in accordance with the Section cited above. The Authority wrote to the Embassies/High Commissions of subject countries in India also.

E NORMAL VALUE:

10 SINGAPORE:

M/S KANEKA SINGAPORE CO. (PTE) LTD.:

- (i) The company has no domestic sales of the product under consideration as well as there is no substantial / representative sales of PHPG Base to the representative third country. The company has provided details of the cost of production of the PHPG Base. The normal value is based on the cost of production including variable and fixed costs plus selling, general & administrative expenses along with a reasonable return.
- (ii) Initially the company provided the cost of production for PHPG Base for the POI and previous 2 years. Certain deficiencies as pointed out in the Preliminary Findings, the Authority did not accept the company's submission at that stage for the purpose of determination of normal value and adopted constructed normal value as the basis of 'Normal Value'. M/s Kaneka Singapore Co (KSC) in its reply to

comment on the preliminary findings submitted some additional information alongwith non-confidential summary of the submission to the Authority.

- (iii) The Authority after analysing the same found it deficient and more clarification on certain issues were called. The Authority again asked Kaneka to provide some additional information / clarification specifically for the POI Data submitted by the exporter on various stages has been analyzed in detail and same is discussed as under -
- (a) It has been observed that during the last 2 years and POI there is a declining trend in overall production of M/s KSC as well as decline in production of the product under consideration. In spite of decline in production, the company has indicated that the consumption norms of raw material, utility has improved during the period of investigation as compared to the previous years. No satisfactory reply to this anomaly has been furnished by the exporter
- (b) In its reply to the Authority M/s Kaneka vide their letter dated 26-7-2002 has clarified that the cost of goods produced and cost of goods sold consists of "variable cost" and "Fixed Cost" and does not include Overheads costs such as sales cost, General and administration cost, interest expenses and Exchange Loss / gains. The exporter has further clarified that Variable cost consists of raw material cost (inclusive of packing material cost) and utility cost and fixed costs mainly consist of consumable (production), direct labour, repair and maintenance, storage charges (for raw materials) etc., The Authority has analysed the explanation as given by the exporter with regard to the cost elements considered to arrive at the cost of production are as under -
- (i) The exporter has indicated that the depreciation has been taken for the "manufacturing facility only". Accordingly it implies that depreciation related to the common facilities to be apportioned on PHPG has not been taken into account,
- (ii) Storing expenses has been taken for raw material only. This implies that storing expenses for finished goods etc. has not been taken into account,
- (iii) Consumable has been taken for the production only. Accordingly consumables for common facilities on PHPG has not been taken into consideration

- (iv) Though claimed that packing expenses has been included in variable cost it has been observed that the cost for drums / carton box has been indicated negligible as compared to the cost shown in the cost statement for the year 1999-2000 and 2000-01
- (v) It has been observed that in spite of decline in overall productivity the exporter has indicated an overall decrease in the per unit cost of utilities. The company has however indicated that when productivity is high in order to shorten cycle time of each batch it may be necessary to use more utility cost to cool and heat the product more quickly and so the consumption of utility becomes worse. An examination of the facts on record however shows contrary to the logic as given by the exporter above
- (vi) The company is adopting straight line method for providing depreciation. From balance sheet it has been observed that there is no considerable disposal on the existing assets rather there is substantial addition in the plant and machinery of the company. In view of the reasons given above it is concluded that the total depreciation amount cannot be less than the previous year's figures. This indicates that the company has not charged full depreciation to the product during the period of investigation
- (vii) The Interest cost has been taken after deducting the other revenue (interest income). Interest income does not relate to operations hence cannot be reduced for the determination of cost of the product
- (viii) The company has claimed no financing cost. The company is a 100% holding of Kaneka Japan and Kaneka Japan has invested **** million Singapore Dollars in the company in the form of equity. Apart from this Rs **** million is payable to Kaneka Japan. Because of the above funding by the holding company there is no interest cost involved. The exporter has indicated that in lieu of this company is paying **** profit to Kaneka Japan apart from dividend. The company has shown an overall profit as **** on cost of sales during the year 2001. Accordingly for determination of Normal Value the Authority proposes to add reasonable profit to the cost of production so arrived to determine Normal Value of the product under consideration during the period of investigation

- (ix) The Authority has specifically asked clarification on Appendix '7 H' provided by the company as cost of sales in the POI and in previous years shown was lower than the cost of production. The company has claimed that cost of goods sold per unit is calculated based on monthly moving average method and it happened that every month production quantity was less than the balance quantity of the previous and the total unit cost of goods reduced were happened to be always higher than the total cost unit of the previous month balance except for August. This happened to meet unit cost of goods sold to each month during the period always lower than the unit cost of goods produced except for August and thus the average unit cost units of goods sold during the period became lower than the average unit goods produced during the period.
- (x) The authority has analysed the submission of the exporter in detail and found that not only for the period of investigation but for the previous years also cost of production was higher than cost of goods sold hence the contention of exporter that because of above reasoning the cost of production is high as compared to the cost of goods sold is not realistic.
- (xi) In spite of the anomalies/ inconsistencies/ discrepancies in the submissions made by the exporter in its reply to the questionnaire and subsequently relating to cost of production, the Authority has determined the Normal Value of the subject goods in Singapore considering the cost of production plus selling general and administrative expenses and reasonable return based on the cost data submitted by the exporter.
- (xii) Accordingly the Authority has determined the Normal Value for M/s KSC Singapore as US \$*****per kg.

11 EXPORT PRICE :

- (a) The exporter has provided transaction-wise details of exports to India during the period of investigation. M/s KSC has sold subject goods to M/s Kaneka Corporation Japan which in turn sold to M/s Summit Asia Pte Ltd and finally sold to Indian customers. Information from M/s Kaneka Corporation Japan and M/s Summit Asia Pte Ltd was obtained and duly considered for arriving at the Export Price and Landed cost of the exports made to India.
- (b) The exporter has claimed adjustments on account of discount, distributor commission commission to parent company packing,

inland freight insurance storage handling overseas freight, overseas insurance and shipping charges to arrive at ex-factory export price for export to India

- (c) The exporter has provided the Invoice value of each transaction on each stage. The Authority has taken the Invoice value of M/s KSC which is the first hand sale from producer to an independent party and afterwards considered adjustments on account of discount packing inland freight insurance storage handling overseas freight, overseas insurance and shipping charges to arrived at ex-factory export price
- (d) It has been observed that the exporter has provided credit to Indian customers ranging from 120 days to 180 days in most of the cases. As detailed in the Invoices the exporter has charged interest in case of credit for a period of 180 days from the customers but in case of credit of 120 days no interest has been charged from the customers. The Authority has provided for the interest for 120 days on the basis of interest rate calculated for 180 days at different point of time for the purpose of arriving at ex-factory export price
- (e) Accordingly the Authority has determined the ex-factory export price of the subject goods as US \$*****per kg

12 OTHER EXPORTERS FROM SINGAPORE:

(a) NORMAL VALUE:

None other exporter/producer in Singapore have responded to the Authority in the form and manner prescribed in the questionnaire. The Authority has determined normal value on the basis of the best information available on record in respect of other exporters from Singapore

(b) EXPORT PRICE

In respect of all other exporters from Singapore the Authority has arrived at ex factory export price based on the information provided by the responding exporter (M/s Kaneka Singapore Co (PTE) Ltd Singapore). This gives ex- factory export price as US \$ **** per Mt of D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base (PHPG Base) from all exporters from Singapore other than M/s Kaneka

13 **CHINA P.R.:**(a) **NORMAL VALUE:**

The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of Normal Value in accordance with Section 9A(1)(c). Only one of the exporters from China P.R. i.e. M/s. Hengdian Group Organic Chemical Co. Ltd., China P.R. responded to the Authority. It has been observed that M/s. Hengdian Group Organic Chemical Co. Ltd., China P.R. has not furnished the complete information in the prescribed format. The information submitted is without any covering letter, only on plain paper with unsigned rubber stamp. The Authority found that information furnished is grossly inadequate and unreliable in absence of proper signature, hence rejected for the purpose of preliminary findings. The Authority therefore, holds that none of the exporters from China P.R. have cooperated with the Authority as envisaged under the Rules. The domestic industry has furnished information with regard to the normal value in China P.R. based on the constructed cost of production. In view of non-cooperation from the exporters from China P.R., the Authority has determined normal value in China P.R. on the basis Rule 6(8) i.e. best information available.

(b) **EXPORT PRICE:**

As explained above, there is no dedicated customs classification for the subject goods as the same is classified in others category. Accordingly, a weighted average export price in case of China P.R. has been arrived at based on the statistics compiled from Customs Daily Lists. Adjustments on account of freight, marine insurance, commission, port handling etc. to arrive at net export price is proposed to be considered as per the claims of the domestic industry.

F **DUMPING—COMPARISON OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE:**

14 The rules relating to comparison provides as follows:

- (a) "While arriving at the margin of dumping, the DA shall make a fair comparison between the Export Price and the Normal Value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time.
- (b) Due allowance shall be made in each case on merits for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sales, taxation levels of

trade, quantities, physical characteristics and any other differences which are demonstrated to affect price comparability"

- (c) The Authority has followed the consistent policy of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I of the Anti Dumping Rules. Based on the Normal values and Export prices as indicated above the Authority assessed the Dumping Margins in case of all exporters from the subject countries as given in the table below:-

COUNTRY-WISE EXPORTERS/ PRODUCERS	NORMAL VALUE (\$/Kg)	EXPORT PRICE (\$/Kg)	DUMPING MARGIN (% OF EXPORT PRICE)
<u>Singapore</u>			
1. M/s Kaneka Singapore Co (PTE) Ltd.,	****	****	10.30
2. All Other exporters	****	****	58.75
<u>China PR</u>			
All Exporters	****	****	97.20

The above Dumping Margins are above the de-minimis limits

G. INJURY AND CAUSAL LINK:

15. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows

"Determination of Injury

- (i) In the case of imports from specified countries, the Designated Authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India
- (ii) The Designated Authority shall determine the injury to Domestic Industry, threat of injury of Domestic Industry, material retardation to establishment of Domestic Industry and a causal link between dumped imports of injury, taking into account all relevant facts including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like

articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules "

16 The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that

- i A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products
- ii While examination the volume of dumped imports the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of Rule 19 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price under-cutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree

H. CUMULATIVE ASSESSMENT OF INJURY:

- 17 (a) Annexure II (iii) under Rule 11 supra further provides that "in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti Dumping investigation the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual country is less than three percent the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article and cumulative assessment of the imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles"
- (b) The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the limit prescribed above Cumulative assessment of the effect of the imports from Singapore and China PR is appropriate since the export prices from

these countries were directly competing with the prices offered by the Domestic Industry in the Indian market and displacing domestic producers here

- 18 For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production capacity utilisation sales quantum, stock, profitability net sales realisation the magnitude and margin of dumping, etc in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra ``
- 19 The various parameters indicating injury to the domestic industry are as follows -

(a) **QUANTUM OF IMPORTS:**

The information with regard to the quantum of imports of the subject goods has been based on the statistics compiled from Customs Daily Lists The Authority notes that there has been an increase of 36.77% in imports of the subject goods from the subject countries during the Period of Investigation over 1999-00

(b) **EXPORT PRICE:**

Further the average export price from the subject countries has also declined during the Period of Investigation against 1999-00 It has been observed that the export price has declined further within the period of investigation itself

(c) **CHANGES IN MARKET SHARE HELD BY INDIAN PRODUCERS AND IMPORTS FROM THE SUBJECT COUNTRY(IES):**

The Authority observes that M/s DOL is the new entrant in manufacture of the subject goods in India and the exporters from subject countries have intensified dumping of the subject goods into India so as to ensure that domestic industry does not get its due market share This has materially retarded the establishment of the industry at its nascent stage itself

(d) **PRODUCTION AND CAPACITY UTILISATION OF THE PETITIONER:**

During period of investigation petitioner has achieved a utilization of 32% of its existing installed capacity only Keeping in view the demand in the country the same is far below than what could have been achieved by the Domestic Industry had the exporters not resorted to dumping

(e) **INSIGNIFICANT GAIN OF MARKET SHARE:**

Domestic industry is at nascent stage, hence no past trends are available but domestic industry is unable to increase its sales volume in spite of huge demand of the subject goods in the country because of dumped imports from subject countries

(f) **REDUCTION IN SELLING PRICE, PRICE EROSION, PRICE UNDERCUTTING, PRICE SUPPRESSION OR PRICE DEPRESSION:**

In order to analyze the effect of dumped imports on the selling price of the Domestic Industry an analysis of the monthly sales realization of the subject goods during the period of investigation has been made. The analysis is as under

Period	Qty Sold/Kg	Net Sales Realization (Rs/Kg)
April-2001	****	****
May-2001	****	****
June-2001	****	****
July-2001	****	****
August-2001	****	****
September-2001	****	****

The indexed above indicates that the monthly average sales realisation during the Period of Investigation has declined from **** Rs/ Kg during April 2001 to **** Rs/ Kg during September 2001 showing a decrease of about 20% within the Period of Investigation itself. This is mainly due to decrease in the average import price by the exporters after the starting of the commercial production by the Domestic Industry.

(g) **EVIDENCE OF LOST CONTRACTS OR DECLINING SALES:**

It has been observed that because of the sharp decrease in the export prices by the exporters the Domestic Industry could not gain contracts/orders at the prices which could recover the cost of production leave aside a fair return on capital employed. The petitioner could sell the subject goods at substantial losses only.

(h) **EMPLOYMENT:**

The domestic industry has submitted that as the industry is at its nascent stage protection from unfair trade practice is vital and necessary otherwise the manpower deployed will lose their jobs.

(i) **PROFITABILITY :**

It has been observed that the Domestic Industry could sell the subject goods at prices so as to match the same being offered by the exporters. This has resulted in huge losses.

(j) **EXPANSION:**

The Domestic Industry has planned to increase its production capacity, however due to dumped imports from subject countries, the Domestic Industry is unable to utilize even its existing capacity.

20 In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. For the examination of the impact on the domestic industry in India, the Authority considered such further indices having a bearing on the state of industry as production, sales, stock, profitability, net sales realisation etc. On examination of the evidence, it has been found there has been a sharp price undercutting just after the domestic industry has started its trial run and further intensified during period of investigation. Domestic Industry is prevented from utilising its present capacity and capacity utilisation is very low. However, the most significant parameter evidencing injury and threat of further injury, is the price undercutting as per the evidence available with the Authority. The rate of increase of imports during the period of investigation, especially from China, PR and the corresponding fall in the sales realization of the domestic industry are the parameters clearly showing the injury being suffered by the domestic industry. On the basis of the evidence available before the Authority, it is determined that the domestic industry has suffered injury and is suffering further threat of injury during the period of investigation.

21 The present petition is basically regarding impact of dumped imports causing material retardation of the establishment of the industry. Since the petitioner is attempting to settle its production in the Indian market and the imports from the subject countries are preventing commercialization of the production by the domestic industry, the imports are causing material retardation to the establishment of the industry. Though at the "nascent industry" i.e. M/s Daurala Organics Ltd. has recently started production, the industry is finding it difficult to get the due place in the market due to dumped imports by the exporters from subject countries. Domestic Industry is unable to achieve a satisfactory level of capacity utilisation and to find its place in the market because at the nascent stage itself the domestic industries is being threatened with material retardation by imports at dumped prices from the subject countries.

2955GI/027

I CAUSAL LINK:

- 22 In determining whether injury (material/threat/material retardation) to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts: -
- (i) Substantial imports of subject goods from China PR and Singapore at dumped prices forced the domestic industry to reduce its selling prices to un-remunerative level which has resulted in a situation of price undercutting in the Indian market
- (ii) The imports from China PR and Singapore suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India
- 23 The Authority, therefore, notes from the above that the imports from the subject countries have been at a price below the selling price of the domestic industry. Further the imports into India have been at a price lower than the non-injurious price for the Domestic Industry. As a consequence thereof the Domestic Industry is suffering financial losses. The petitioner was also prevented from attaining a reasonable level of capacity utilisation. These parameters collectively and cumulatively indicate that the petitioner has suffered material injury due to the dumped imports.

J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST:

- 24 The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.
- 25 The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.
- 26 The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from China PR and Singapore in any way and therefore,

would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

K. CONCLUSIONS:

- 27 The Authority has after considering the foregoing come to the conclusion that
 - (I) D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base has been exported to India from China PR and Singapore below its normal value
 - (II) The Indian industry has suffered material injury and facing threat of further injury
 - (III) The Domestic Industry on account of the injury being suffered is suffering material retardation in the establishment of new industry to manufacture D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base
 - (IV) The injury has been caused cumulatively by the imports from the subject countries
- 28 The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty on all imports of D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base from subject countries in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less which if levied would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.
- 29 Accordingly the Authority recommends that definite anti dumping duties be imposed on all imports of D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Base also known as D (-) Alpha Para Hydroxy Phenyl Glycine D (-) Alpha Para Hydroxy Phenyl Glycine Base D (-) Para Hydroxy Phenyl Glycine Para Hydroxy Phenyl Glycine Base Para Hydroxy Phenyl Glycine D (-) P – Hydroxy Phenyl Glycine Base D (-) P – Hydroxy Phenyl Glycine falling under Custom Heading 2942 originating in or exported from Peoples Republic of China and Singapore pending final determination. The Anti-Dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in column 3 of the following table and the landed value of imports per Kg to be

imposed on all the imports of subject goods falling under Chapter 29 of the Customs Tariff, originating in or exported from the countries mentioned below: -

1.	Exporter/Country 2.	Amount(US\$ Per Kg.) 3.
a	<u>China P.R.</u>	
	All Exporters	22.42
b	<u>Singapore</u>	
	1) M/s Kaneka Singapore Co. (Pte) Ltd.	20.88
	2) Other exporters from Singapore	22.42

30. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
31. Subject to the above, the Authority confirms the Preliminary Findings dated 31st December, 2001
32. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority